ज्ञानयज्ञ
का
महत्त्व और योजनाएँ

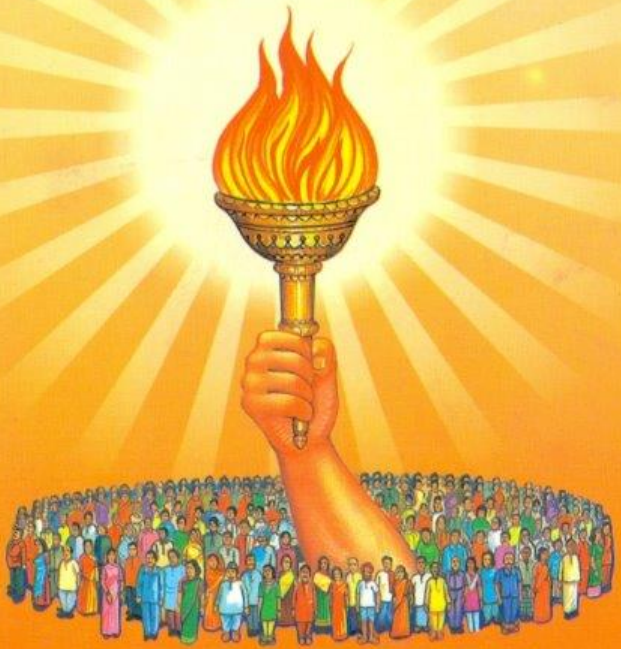

ज्ञानयज्ञ का महत्व और योजनाएँ

संकलन–संपादन

युग निर्माण योजना

: प्रकाशक :

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि, मथुरा–281003

फोन : 0565–2530128, 2530399

फैक्स : 2530200

सन् 2008

मूल्य : 13.00 रुपये

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा–281003
फोन : 0565–2530128, 2530399
फैक्स : 0565–2530200

संकलन–संपादन :
युग निर्माण योजना, मथुरा

आवृत्ति द्वितीय संस्करण–2008

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा–281003

आत्म निवेदन

यह पुस्तक आपके हाथों में पूज्य गुरुदेव का चिंतन लेकर आई है। समय-समय पर ज्ञानयज्ञ से संबंधित कार्यक्रम और योजनाएँ जो गुरुदेव द्वारा बताई जाती थीं उनका संकलन इस पुस्तक में किया गया है। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि–"नवनिर्माण के लिए आवश्यक विचारधारा हमने अपने अंतरंग का निर्झर खोदकर प्रवाहित की है। उससे जन-जन के मन को सींचने का कार्य हमारे उत्तराधिकारी करेंगे। विचार क्रांति की मशाल जलती रहनी चाहिए। यह प्रकाश दूर-दूर तक फैलता रहना चाहिए। ऐसा न हो कि सहयोग का स्नेह न पाकर हमारी यह अमानत अपना अस्तित्व खो बैठे।"

साहित्य और पत्रिकाएँ पूज्य गुरुदेव की वाणी हैं। उनकी आवाज अधिक लोगों तक पहुँच सके, ऐसा प्रयास हम सबको करना चाहिए। पूज्य गुरुदेव ने अंतरंग से निकली विचारधारा से जन-जन के मन को सींचने का दायित्व हमारे-आपके ऊपर सौंपा है। हमें अपने कंधे मजबूत होने का प्रमाण देना है। सौंपे गए दायित्व को पूरा करने में तनिक भी कोताही नहीं बरतनी है।

गुरुदेव ने लिखा है कि–"युग निर्माण अभियान की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है, सुयोग्य और प्रशिक्षित, अनुभवी और कुशल लोक नेताओं की, जो इस अभियान के महामत्त गजराज को सही दिशा में चलाने की भूमिका कुशलतापूर्वक निभा सकें। अन्यथा वह अव्यवस्थित और अनियंत्रित होकर अवांछनीय दिशा में फूट सकती है।"

सक्रिय परिजन गोष्ठियों में इन कार्यक्रमों को चर्चा का विषय बनाएँ। इस अभियान का नेतत्व करने के लिए पाँच

विभूतियों (ज्ञान, धन, पुरुषार्थ, समय एवं प्रभाव) की आज आवश्यकता है। इनमें से जो जिसके पास हो वह उसे लेकर युग देवता महाकाल के चरणों में उपस्थित होकर युग के नवनिर्माण की योजना में ऐतिहासिक भूमिका संपन्न करते हुए अपने को धन्य बना सकता है।

परिजनों को चाहिए कि यह पुस्तक अधिक संख्या में मँगाकर अपने क्षेत्र के सभी कार्यकर्त्ताओं और देश, समाज, संस्कृति के लिए कुछ करने में रुचि रखने वाले लोकसेवियों को पढ़ानी चाहिए। इसे बिक्री द्वारा अथवा दानवीरों के सहयोग से अनुदान द्वारा जन-जन तक पहुँचाना चाहिए।

यह पुस्तक पूज्यवर के क्रांतिकारी चिंतन को हृदयंगम करके ज्ञानयज्ञ की योजनाओं में कुछ कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करेगी। हमारा पूर्ण विश्वास है कि जो परिजन इस पुस्तक के एक-एक शब्द का पूरे मनोयोग से श्रद्धा सहित स्वाध्याय करेंगे, उन्हें पूज्यवर की प्राण चेतना निष्क्रिय होकर नहीं बैठने देगी। उन्हें नवनिर्माण के कार्यों हेतु निरंतर प्रेरणा-प्रोत्साहन प्रदान करती रहेगी।

द्वारका प्रसाद चैतन्य
युग निर्माण योजना, मथुरा

वर्तमान भारत की विषम परिस्थितियाँ

जिन परिस्थितियों में हमें आज जीवनयापन करना पड़ रहा है, उन्हें बदलना नितांत आवश्यक है। जीवनोपयोगी साधनों का अभाव अनेकों को कष्ट दे रहा है। यों धरती माता का भंडार खाली नहीं हो गया, उसके पास अपनी प्रत्येक संतान का समुचित निर्वाह कर सकने के लिए व्यापक धन-धान्य प्रचुर मात्रा में विद्यमान है, पर उसके उत्पादन, वितरण एवं संग्रह की वर्तमान प्रणाली इतनी दूषित है कि चंद श्रीमंतों को छोड़कर शेष सभी को अत्यधिक कष्ट के साथ गुजर करने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। सामाजिक न्याय के अभाव में मनुष्य, मनुष्य के खून का प्यासा बना हुआ है। अमुक वंश, जाति में पैदा होने के कारण लोग ऊँच या नीच माने जाते हैं और उन्हें अहंकार करने एवं तिरस्कृत होने का अवसर मिलता हैं। स्त्रियाँ पुरुषों की खरीदी हुई जड़-संपत्ति की तरह दिन गुजार रही हैं। सामाजिक कुरीतियों का ऐसा बोलबाला है कि विवाह-शादी जैसे मामूली से आयोजन को आकाश-पाताल जैसा तूल मिल गया है और उस कुचक्र में जन-समाज की आर्थिक एवं पारिवारिक सुव्यवस्था चकनाचूर हुई जा रही है। इन परिस्थितियों में हमें जिस घुटन के साथ जिंदा रहना पड़ रहा है, वह दिन-दिन असह्य होती जाती है। युग की आत्मा पुकारती है कि इन विषमताओं को बदला ही जाना चाहिए।

अपना जन-जीवन दर्शन आज कितना क्षुद्र एवं घृणित है, इसे देखकर विवेक की आत्मा सिहर उठती है। हर आदमी के सामने धन का बिना उचित-अनुचित का ध्यान किए प्रचुर मात्रा में उपार्जन एवं संग्रह करना ही एकमात्र लक्ष्य बना हुआ है। उस उपार्जन का उपयोग वह केवल अपने व्यक्तिगत विलास, स्वार्थ एवं अहंकार की पूर्ति तक ही सीमित रखे हुए है। इस हर दृष्टि से पिछड़े हुए समाज को उठाने और बढ़ाने

के लिए आर्थिक साधनों की अत्यधिक आवश्यकता है, पर लोग अपनी संपन्नता बढ़ाने और विलासिता उभारने के अतिरिक्त उस दिशा में सोच तक नहीं पाते। कुछ अनुदान दे सकना तो दूर की बात है। जो देते भी हैं उनके पीछे कोई उदारता या विवेक नहीं होता, केवल अपनी कीर्ति के मूल्य पर ही कुछ रोटियाँ फेंकी जाती हैं। आज का यही अहंकार है। इसने अपराधों की बाढ़ खड़ी कर दी है। हर क्षेत्र में अर्थ-लोलुपता ने एक प्रकार का चरित्र संकट खड़ा कर दिया है। जहाँ देखिए प्रकट-अप्रकट, भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है। फलते शोषण, उत्पीड़न, छल, विश्वासघात, लूट, हत्या, गुंडागर्दी, बेईमानी की घटनाएँ पग-पग पर देखने को मिल रही हैं। उनकी प्रतिक्रिया से दशों दिशाएँ क्षोभ, रोष, असंतोष एवं प्रतिशोध की भावना से भरी हुई उद्विग्न हो रही हैं। क्या इन परिस्थितियों के, इन आकांक्षाओं एवं आदर्शों के रहते कभी सामाजिक शांति स्थापित हो सकती है ? यदि हमें चैन से रहने और रहने देने की स्थिति प्राप्त करनी हैं तो इन परिस्थितियों को बदलने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1967 पृ. 38

देश की मूलभूत समस्याएँ

देश के सामने महँगाई और अन्न-संकट की समस्या है। अपराध बढ़ रहे हैं और हर व्यक्ति अपने को असुरक्षित समझने लगा है। पारस्परिक व्यवहार इतने दूषित हो गए हैं कि किसी पर विश्वास करना कठिन हो रहा है, पर बिना विश्वास किए काम नहीं चलता है। मांसाहार की दुष्प्रवृत्ति गौ तथा दूसरे उपयोगी प्राणियों को सफाचट करती जा रही है। नशेबाजी में विपुल धन खरच होता है और बदले में अस्वस्थता पल्ले बँधती है। बहुत बड़ी आबादी अब भी देश में अनपढ़ है। गरीबी के कारण जीवन विकास के सभी द्वार बंद हैं। विवाह-शादियों में होने वाला अपव्यय समाज की कमर

तोड़कर रखे दे रहा है। देश का आधा अंग स्त्री समाज पिंजड़ों में बंद पक्षियों की तरह बेबस, बेजुबान और बेकार होकर जी भर रहा है। जाति-पाँति, ऊँच-नीच और भेदभाव ने समाज को हजारों टुकड़ों में बाँटकर विसंगठित कर दिया है। रूढ़िवादिता, ढोंग और अंधविश्वास ने लोगों को बौद्धिक पराधीनता में जकड़ दिया है। सर्वसाधारण का स्वास्थ्य बुरी तरह गिरता जा रहा है। राजनेता जिस अदूरदर्शिता और घटिया चरित्र का परिचय दे रहे हैं, उससे उद्विग्नता और निराशा बढ़ रही है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैज्ञानिक प्रगति विश्वमानव के लिए सर्वनाश का कारण बनी हुई है। विलासिता की अभिवृद्धि से लोग कायर और कुचाली बनते चले जा रहे हैं। स्वार्थपरता और संकीर्णता ने प्रत्येक क्षेत्र को धूर्तता, दुष्टता और अनैतिकता के बाहुल्य से भर दिया है।

उपर्युक्त प्रकार की अगणित समस्याएँ हमारे सामने हैं। ये अपने हल माँगती हैं। यदि इन्हें ऐसे ही पड़ा रहने दिया गया तो अगले थोड़े ही दिनों में सर्वनाशी और सर्वग्राही संकट मानव-समाज के सामने उठ खड़ा होगा और लाखों-करोड़ों वर्ष की संग्रहीत सभ्यता सहित मानव-समाज अपनी सामूहिक आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाएगा। इस विभीषिका से बचने के लिए हमें प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक स्तर के रचनात्मक आयोजन कार्यान्वित करने होंगे। नरक को स्वर्ग में परिणत करने के लिए अगणित प्रकार के, अगणित स्तर के, अगणित कलेवरों के, अगणित रचनात्मक एवं संघर्षात्मक आयोजन प्रस्तुत करने पडेंगे। सर्वांगीण उत्कर्ष के लिए सर्वांगीण योजनाएँ अनिवार्य रूप से आवश्यक होंगी। छोटे-मोटे बाँध बनाने के लिए कितने इंजीनियर, कितने ओवरसियर, कितने मजदूर, कितने यंत्र, कितने वाहन, कितने साधन और कितने धन की आवश्यकता पड़ती है, यह हम रोज ही देखते हैं। फिर युग निर्माण जैसे महान निर्माण के लिए कितने व्यक्तियों

और कितने साधनों की जरूरत पड़ेगी, इसका अनुमान लगाना कुछ अधिक कठिन नहीं होना चाहिए। जादू की फूँक मार देने मात्र से इतने बड़े प्रयोजन पूर्ण नहीं होते। इसके लिए वैसी ही महान उपलब्धियाँ विनिर्मित करनी पड़ेंगी जैसा कि महान लक्ष्य एवं आयोजन है।

—अखण्ड ज्योति मार्च 1967 पृ. 43

परमात्मा का आश्वासन

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं।।

की प्रतिज्ञा के अनुसार इन विषम परिस्थितियों को बदलने के लिए अब भगवान पुनः अवतरित हो रहे हैं। व्यक्ति के रूप में नहीं, एक प्रचंड़ आंदोलन के रूप में। व्यक्ति में दोष भी रहता है इसलिए अवतारी महापुरुष में भी कोई कलंक रह जाता है। आंदोलन के आदर्श यदि उत्कृष्ट हों तो वह निष्कलंक ही रहता है। भले ही कुछ अनुपयुक्त व्यक्ति उसे गंगाजी में पड़े हुए कछुओं की तरह मलीन करने की चेष्टा करते रहें। इस युग के परिवर्तन पर "निष्कलंक अवतार" होने की भविष्यवाणी शास्त्रों में है। कलंक से बचने के लिए वह निष्कलंक अवतार अब नव-निर्माण के लिए समुद्यत युग-परिवर्तन आंदोलन के रूप में सामने आया है। प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति को लंका-विजय में सलंग्न रीछ, बानर, गिद्ध और गिलहरियों की तरह, गोवर्धन उठाते समय लाठी लगाने वाले ग्वाल-बालों की तरह, शिव विवाह की बरात में गए भूतगणों की तरह, स्वतंत्रता आंदोलन में साहस और त्याग दिखाने वाले वीर सत्याग्रहियों की तरह आगे आना होगा और महाकाल की युग निर्माण प्रत्यावर्तन प्रक्रिया को सफल बनाने में बढ़-चढ़कर योगदान देना होगा।

—अखण्ड ज्योति अगस्त 1967 पृ. 39—40

भगवान के कार्य में सहयोगी बनें

अपने प्रत्येक परिजन को गंभीर चेतावनी और प्रबल प्रेरणा के साथ इस दिशा में मोड़ने के लिए प्रयत्न किया गया है कि यह युग बदलने का अनुपम अवसर है। हर प्रबुद्ध आत्मा का कुछ विशेष कर्त्तव्य एवं कुछ विशेष उत्तरदायित्व है। भगवान का प्रयोजन पूरा करने में सहयोगी होना वर्तमान युग के जीवित अध्यात्मवादियों के लिए विवेक की सबसे बड़ी चुनौती है। इसे समझा और स्वीकारा जाए।

परमार्थ प्रयोजनों के लिए समय का अभाव केवल एक ही कारण से रहता कि मनुष्य तुच्छ स्वार्थों को सर्वोत्तम समझता है और उन्हीं की पूर्ति को प्रमुखता देता है। जो कार्य बेकार लगेगा, उसी के लिए समय न बचेगा। परमार्थ को बेकार की बात माना जायगा तो उसके लिए समय कहाँ से बचेगा ? भगवान की युग की पुकार को उपेक्षणीय माना जायगा तो उसके लिए श्रम या धन खरच करने की सुविधा कहाँ रह जायगी ? अपनी आत्मा को मिथ्या प्रवंचनाओं से नहीं ठगना चाहिए। समय, श्रम या धन न बचने का बहाना नहीं बनाना चाहिए। प्रबुद्ध, विवेकशील एवं जाग्रत आत्माओं से परमेश्वर कुछ बड़ी आशाएँ करता है। उसी के अनुरूप हमें गतिविधियों को मोड़ना चाहिए।

-अखण्ड ज्योति मार्च 1967 पृ. 35

बड़प्पन की नहीं महानता की आराधना

हमारा विशाल परिवार ही शेष रह गया है जिसे कुछ अंतिम निर्देश देकर जाना है। कितने ही व्यक्ति कहते रहते हैं कि हम आपके साथ हिमालय चलेंगे। उनसे यही कहना है कि वे आदर्शों के हिमालय पर उसी तरह चढ़ें जिस तरह हम जीवनभर चढ़ते रहे। तपश्चर्या का मार्ग अति कठिन है। हमारी हिमालय यात्रा कश्मीर की सैर नहीं है, जिसका मजा

लूटने हर कोई बिस्तर बाँधकर चल दे। उसकी पात्रता उसी में हो सकती है जिसने आदर्शों के हिमालय पर चढ़ने की प्राथमिक पात्रता एकत्रित कर ली। सो हम अपने हर अनुयायी से अनुरोध करते रहे हैं और अब अधिक सजीव शब्दों में अनुरोध करते हैं कि वे बड़प्पन की आकांक्षा को बदलकर महानता की आराधना शुरू कर दें। यह युग परिवर्तन का शुभारंभ है जो हमारे परिजनों को तो आरंभ कर ही देना चाहिए। 'हम बदलेंगे युग बदलेगा' का नारा हमें अपने व्यक्तिगत जीवन की विचार-पद्धति और कार्य-प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन प्रस्तुत करके सार्थक बनाना चाहिए। निस्संदेह अपने परिवार में इस प्रकार का बदलाव यदि आ जाए तो फिर कोई शक्ति युग परिवर्तन एवं नवनिर्माण को सफल बनाने में बाधक न हो सकेगी।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 57

मोहग्रस्त नहीं विवेकवान बनें

परिवार के प्रति हमें सच्चे अर्थों में कर्त्तव्यपरायण और उत्तरदायित्व निर्वाह करने वाला होना चाहिए। आज मोह के तमसाच्छन्न वातावरण में जहाँ बड़े लोग छोटों के लिए दौलत छोड़ने की हविस में और उन्हीं की गुलामी करने में मरते-खपते रहते है, वहाँ घर वाले भी इस शहद की मक्खी को हाथ से नहीं निकलने देना चाहते, जिसकी कमाई पर दूसरे ही गुलछर्रे उड़ाते हैं। आज के स्त्री-बच्चे यह बिलकुल पसंद नहीं करते कि उनका पति या पिता उन्हें लाभ देने के अतिरिक्त लोकमंगल जैसे कार्यों में कुछ समय या धन खरच करे। इस दिशा में कुछ करने पर घर का विरोध सहना पड़ता है। उन्हें आशंका रहती है कि कहीं इस ओर दिलचस्पी लेने लगे तो अपने लिए जो मिलता था, उसका प्रवाह दूसरी ओर मुड़ जाएगा। ऐसी दशा में स्वार्थ-संकीर्णता के वातावरण में पले उन लोगों का

विरोध उनकी दृष्टि में उचित भी है, पर उच्च आदर्शों की पूर्ति उनके अनुगमन से संभव ही नहीं रहती। यह सोचना क्लिष्ट कल्पना है कि घर वालों को सहमत करने के बाद परमार्थ के लिए कदम उठाएँगे। यह पूरा जीवन समाप्त हो जाने पर भी संभव नहीं होगा। जिन्हें वस्तुतः कुछ करना हो उन्हें अज्ञानग्रस्त समाज के विरोध की चिंता न करने की तरह परिवार के अनुचित प्रतिबंधों को भी उपेक्षा के गर्त में ही डालना पड़ेगा। घर वाले जो कहें, जो चाहें वही किया जाए, यह आवश्यक नहीं। हमें मोहग्रस्त नहीं विवेकवान होना चाहिए और पारिवारिक कर्त्तव्यों की उचित मर्यादा का पालन करते हुए उन लोभ एवं मोह भरे अनुबंधों की उपेक्षा ही करनी चाहिए जो हमारी क्षमता को लोकमंगल में न लगने देकर कुटुंबियों की ही सुख-सुविधा में नियोजित किए रहना चाहते हैं। इस प्रकार का पारिवारिक विरोध आरंभ में हर महामानव और श्रेयपथ के पथिक को सहना पड़ा है। अनुकूलता पीछे आ गई यह बात दूसरी है, पर आरंभ में श्रेयार्थी को परिवार के इशारे पर गतिविधियाँ निर्धारित करने की अपेक्षा आत्मा की पुकार को ही प्रधानता देने का निर्णय करना पड़ा है।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 58

मानव-जीवन की गरिमा को भूलें नहीं

मानव-जीवन एक दिव्य विभूति है। अनुपम अवसर और सुरदुर्लभ सौभाग्य है। इसे उच्च आदर्शों और उत्कृष्ट क्रिया-पद्धति के लिए ही प्रयुक्त किया जाना चाहिए, पर आज लोग जिस हैवानी और शैतानी रीति-नीति को अपनाकर मौत के दिन पूरे कर रहे हैं, उसे देखते हुए यही कहना होगा कि मनुष्य को न तो अपनी उत्कृष्टता का ध्यान रहा न महानता का। न उसे अपने जीवन का उद्देश्य एवं स्वरूप विदित है और न सदुपयोग की दिशा मालूम है। इंसान का शरीर ओढ़े शैतान

का स्वच्छंद विचरण इस युग की सबसे बड़ी विभीषिका है। यह स्थिति विषम से विषमतर होती चली जा रही है और हम सर्वग्राही, सत्यानाशी, रौरव नर्क में गिरने के लिए द्रुतगति से बढ़ रहे हैं। क्या इस विभीषिका की उपेक्षा करते रहना ही उचित है ? क्या इस सामूहिक आत्महत्या को रोकने के लिए हम प्रबुद्ध व्यक्तियों का कुछ भी कर्त्तव्य नहीं है ?

आज के विश्व का कण-कण परिवर्तन की माँग करता है। आज का विश्व मानव इन विडंबनाओं से छुटकारा पाने के लिए आकुल है। परिवर्तन आज की एक अनिवार्य, अपरिहार्य आवश्यकता है। इसे पूरा करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1967 पृ. 39

कर्मठता और समर्थता की खोज

राष्ट्र का भावनात्मक नवनिर्माण करने के लिए प्रचार कार्य सर्वोपरि है ही, साथ ऐसे रचनात्मक और संघर्षात्मक कार्य भी आरंभ करने हैं, जिनके आधार पर जनसाधारण को कुछ करने, होने तथा बदलने का प्रत्यक्षीकरण दिखाई पड़े। विचारों में परिपक्वता कार्यों से आती है। क्रिया और भावनाओं से मिलकर ही वे संस्कार बनते हैं, जिन पर व्यक्तित्वों का स्तर निर्भर रहता है। इसलिए हम सदा प्रचार ही न करते रहेंगे। यह तो हमारा प्रथम चरण है। जैसे ही प्रचार के समुद्र मंथन से कुछ नर-रत्न हाथ लगेंगे, उनको रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यों में उनकी क्षमता, योग्यता एवं प्रतिभा के अनुरूप संलग्न होने की प्रेरणा देंगे।

कृष्ण जानते थे कि सही और पूरा काम कराने के लिए व्यक्ति को उस कार्य की उपयोगिता, आवश्यकता एवं फलितार्थों को बताया जाना आवश्यक है। असंतुष्ट और अन्यमनस्क अर्जुन उपेक्षा भाव से लड़ने भी लगा तो उसमें समुचित शौर्य एवं मनोयोग का समावेश न होगा और अंततः महाभारत का

उद्देश्य ही निष्फल हो जाएगा। अस्तु, गीता प्रवचन को प्राथमिक किंतु अति आवश्यक कर्त्तव्य समझकर भगवान ने पहले उसे ही हाथ में लिया। इसके बाद ही महाभारत निर्माण का पुण्य-प्रयोजन पूरा किया जा सका।

अपने सामने भी दुर्बल, दिग्भ्रांत, दरिद्र, तमसाच्छन्न, नगण्य एवं तुच्छ बने हुए भारत को समर्थ ,समृद्ध और प्रबुद्ध महाभारत का निर्माण करना है। भारत चिर-अतीत से महान रहा, अब फिर उसे महाभारत ही बनना होगा। जनशक्ति का अर्जुन अभी मोह और अवसादग्रस्त हो रहा है। उसका 'कार्पण्य' हटाया जाना शेष है। इसके लिए युग-गीता गानी पड़ेगी। युग निर्माण योजना की विचार-क्रांति गीता गायन एवं पांचजन्य का तुमुल नाद है। नवनिर्माण का विकल्प केवल सर्वनाश है। दोनों में से एक को चुनना होगा। निश्चय ही हम सर्वनाश नहीं चुन सकते। नवनिर्माण की जिम्मेदारी स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। सो इच्छा और अनिच्छा से इसी ओर चलना होगा। नियति हम प्रबुद्धता संपन्न अंतःकरण वालों को इसी दिशा में नियोजित करके रहेगी।

आज का जनमानस बहुत करके कुमार्गगामी और दुर्भावना युक्त हो रहा है, इसलिए हर क्षेत्र में एक-से-एक घृणित और कष्टकारक दुष्प्रवृत्तियाँ पनपती दीखती हैं। उनका उपचार मानव जाति का समान रूप से बौद्धिक कायाकल्प करना ही है। इसके लिए पग-पग पर रचनात्मक सत्प्रवृत्तियाँ खड़ी करनी होगीं और ऐसे संघर्षात्मक मोर्चे खड़े करने पड़ेंगे जो अभ्यस्त अपराधियों एवं मूढ़ मान्यताओं से ग्रसित लोगों को अपनी कुचाल छोड़ने के लिए मजबूर कर सकें।

उपर्युक्त कार्यों के लिए एक ऐसी जनशक्ति का उदय होना चाहिए जो पेट और प्रजनन से ऊँचा उठकर सोच सकें और वासना-तृष्णा के लिए मरते-खपते रहने से आगे बढ़कर

देश, धर्म, समाज, संस्कृति के लिए कुछ सेवा-सहयोग की, त्याग-बलिदान की बात सोच सकें। कर्मठ लोकसेवियों की जनशक्ति उदय हुए बिना सुधार की सारी विचारणाएँ मनोरंजक कल्पनाएँ मात्र बनकर रह जाएँगी। प्राण तो कर्मठता में रहता है। निर्माण तो पुरुषार्थ से होता है। इसलिए अपने चारों ओर बिखरे हुए नर-पशुओं से हमें मनुष्यता का प्रकाश, गर्व और शौर्य उत्पन्न करना है ताकि वह स्वार्थ-संकीर्णता की परिधि से बाहर निकलकर कुछ ऐसा कर सकें जैसा कि प्रबुद्ध और सजग आत्माएँ अपने स्वरूप, तत्त्व एवं कर्त्तव्य का स्मरण करके प्रयत्न करती रहती हैं।

निर्माण के लिए कर्मठता कहीं से जगे और शायद प्रसुप्त मानवीय गर्व-गौरव, शौर्य-साहस, विवेक-सौहार्द्र जगता मिल जाए। इसी ढूँढ़-खोज में से बीन-बीनकर महाकाल अगले दिनों युग-निर्माताओं की एक जनशक्ति खड़ी करेगा और वे विश्वशांति के प्रहरी स्वयं कष्ट उठकर लोकमंगल के महान प्रयोजन को पूरा करेंगे।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1969 पृ. 16-17-20

महामानव बनने के लिए त्याग-बलिदान आवश्यक

बड़े आदमी बनने की हविस और ललक स्वभावतः हर मनुष्य में भरी पड़ी है। उसके लिए किसी को सिखाना नहीं पड़ता। धन, पद, इंद्रिय-सुख, प्रशंसा, स्वास्थ्य आदि कौन नहीं चाहता ? वासना और तृष्णा की पूर्ति में कौन व्याकुल नहीं है ? पेट और प्रजनन के लिए किसका चिंतन नियोजित नहीं है ? अपने परिवार को हमने बड़े आदमियों का समूह बनाने की बात कभी नहीं सोची। उसे महापुरुषों का देव समाज देखने की ही अभिलाषा सदा से रही है। वस्तुतः महामानव बनना ही व्यक्तिगत जीवन का साफल्य और समाज का

सौभाग्य माना जा सकता है। मनुष्य जीवन की सार्थकता महामानव बनने में है। इसके अतिरिक्त आज की परिस्थितियाँ महामानवों की इतनी आवश्यकता अनुभव करती हैं कि उन्ही के लिए सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची हुई है। हर क्षेत्र उन्हीं के अभाव में वीरान और विकृत हो रहा है। ओछे स्तर के, बड़प्पन के भूखे लोग बरसाती उद्‌भिजों की तरह अहर्निश बढ़ते चले जा रहे हैं, पर महामानवों की उद्‌भव स्थली सूनी पड़ी है। गीदड़ों के झुंड बढ़ चले, पर सिंहों की गुफाएँ सुनसान होती चली जा रहीं हैं। इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता महामानवों का उद्‌भव होना ही है। वे बढ़ेंगे तो ही विश्व के हर क्षेत्र में संव्याप्त उलझनों और शोक-संतापों का समाधान होगा। अपने परिवार का गठन हमने इसी प्रयोजन के लिए किया था। इस खान से नर-रत्न निकले और विश्व इतिहास का एक नया अध्याय आरंभ करें। युग परिवर्तन जैसे महान अभियान को उथले स्तर के व्यक्तियों द्वारा नहीं, केवल उन्हीं लोगों से संपन्न किया जा सकता है, जिनको महापुरुषों की श्रेणी में खड़ा किया जा सके।

हर विभूति कुछ मूल्य देकर खरीदी जाती है। उपहार पाने के लिए भी पात्रता उत्पन्न करनी पड़ती है। समय आ गया कि अपने विशाल परिवार के सामने उन प्रयोगों को प्रस्तुत करें जो आत्मबलसंपन्न तथा लोकनिर्माण में समर्थ व्यक्तियों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं। हमने अपनी जीवन साधना में इन तत्त्वों का समावेश किया और मंजिल की एक संतोषजनक लंबाई पार कर चुके। अपने हर अनुयायी से इस अवसर पर यही अनुरोध कर सकते हैं कि जितना अधिक संभव हो इसी मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, जिस पर हम चलते रहे हैं। महामानव बनने के लिए त्याग-बलिदानों का मूल्य चुकाना

पड़ता है, आत्मपरिष्कार के लिए प्रबल पुरुषार्थ करना पड़ता है।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 55

विश्वमानव को समुन्नत बनाएँ

परमार्थ प्रवृत्तियों का शोषण करने वाली इस विडंबना से हममें से हर एक को बाहर निकल आना चाहिए कि ईश्वर एक व्यक्ति है और वह कुछ पदार्थ अथवा प्रशंसा का भूखा है, उसे रिश्वत या खुशामद का प्रलोभन देकर उल्लू बनाया जा सकता है और मनोकामना तथा स्वर्ग-मुक्ति की आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए लुभाया जा सकता है। इस अज्ञान में भटकता हुआ जनसमाज अपनी बहुमूल्य शक्तियों को निरर्थक विडंबनाओं में बरबाद करता रहता है। वस्तुतः ईश्वर एक शक्ति है जो अंतश्चेतना के रूप में सद्गुणों और सत्प्रवृत्तियों के रूप में हमारे अंतरंग में विकसित होती है। ईश्वरभक्ति का रूप पूजा-पत्री की टंट-घंट नहीं विश्वमानव के भावनात्मक दृष्टि से समुन्नत बनाने का प्रबल पुरुषार्थ ही हो सकता है। देवताओं की प्रतिमाएँ तो ध्यान के मनोवैज्ञानिक व्यायाम की आवश्यकता पूर्ति करने की धारणा मात्र है। वस्तुतः जैसे देवी-देवता मूर्तियों और चित्रों में अंकित किए गए हैं, उनका अस्तित्व कहीं भी नहीं है। उच्च भावनाओं का आलंकारिक रूप ही ईश्वर के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है। ऋतंभरा प्रज्ञा को ही सरस्वती कहते हैं। मन को साधने के लिए ही उसकी आलंकारिक छवि विनिर्मित की गई है। वस्तुतः अंतरंग में समुन्नत सद्ज्ञान ही सरस्वती है। इस तथ्य को समझे बिना अध्यात्म भी कोई जाल-जंजाल ही सिद्ध होगा और मनुष्य को आत्मप्रवंचना से भटकाकर उसकी उन शक्तियों में बरबाद कर देगा जो लोकमंगल की दिशा में प्रयुक्त होने पर व्यक्ति और समाज की भारी हित साधना कर सकती थी। हमारा परामर्श

है कि परिजन कल्पित ईश्वर की खुशामद में बहुत सिर न फोड़े। अपने अंतरंग को और विश्वमानव को समुन्नत करने के प्रयत्नों में जुट जाएँ और उस त्याग-बलिदान को वास्तविक ईश्वरभक्ति तथा तपश्चर्या समझें। इस प्रक्रिया को अपनाकर वे ईश्वरीय अनुग्रह जल्दी प्राप्त कर सकेंगे। पूजा-उपासना का मूल प्रयोजन अंतरंग पर चढ़े हुए मलावरण विक्षेपों पर साबुन लगाकर अपने ज्ञान और कर्म को अधिकाधिक परिष्कृत करना भर है। ईश्वर को न किसी की खुशामद पसंद है और न धूप-दीप बिना उसका कोई काम रुका पड़ा है। व्यक्तित्व को परिष्कृत और उदार बनाकर ही हम ईश्वरीय अनुग्रह के अधिकारी बन सकते हैं। इस तथ्य को हमारा हर परिजन हृदयंगम करले तो वह मंत्र-तंत्र में उलझा रहने की अपेक्षा उस दिशा में बहुत दूर तक चल सकता है जिससे कि विश्व-कल्याण और ईश्वरीय-प्रसन्नता के दोनों आधार अविच्छिन्न रूप से जुड़े हुए हैं।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 57

विश्वव्यापी परिवर्तन के लिए सक्रियता लाएँ

भारत के पिछले राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में कितनी जनशक्ति और कितनी धनशक्ति लगी थी, यह सर्वविदित है। यह भारत तक और उसके राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित थी। अपने अभियान का कार्यक्षेत्र उससे सैकड़ों गुना बड़ा है। अपना कार्यक्षेत्र समस्त विश्व है और परिवर्तन राजनीति में ही नहीं वरन व्यक्ति तथा समाज के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन प्रस्तुत करने हैं। इसके लिए कितने सृजनात्मक और कितने संघर्षात्मक मोर्चे खोलने पड़ेंगे, इसकी कल्पना कोई भी दूरदर्शी कर सकता है। वर्तमान अस्तव्यस्तता को सुव्यवस्था में परिवर्तित करना एक बड़ा काम है। मानवीय मस्तिष्क की दिशा, विचारणा, आकांक्षा, अभिरुचि और प्रवृत्ति को बदल

देना, निकृष्टता के स्थान पर उत्कृष्टता की प्रतिष्ठापना करना, सो भी समस्त पृथ्वी पर रहने वाले छह अरब से अधिक व्यक्तियों में निस्संदेह एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक काम है। इसमें अगणित व्यक्तियों, असंख्य आंदोलनों और असीम क्रियातंत्रों का समन्वय होगा। यह एक अवश्यंभावी प्रक्रिया है, जिसे महाकाल अपने ढंग से नियोजित कर रहे हैं। हर कोई देखेगा कि आज की वैज्ञानिक प्रगति की तरह कल भावनात्मक उत्कर्ष के लिए भी प्रबल प्रयत्न होंगे और उसमें एक-से-एक बढ़कर व्यक्तित्व एवं संगठन गजब की भूमिका प्रस्तुत कर रहे होंगे। यह सपना नहीं, सचाई है, जिसे अगले दिनों हर कोई मूर्तिमान होते हुए देखेगा। इसे भविष्यवाणी नहीं समझना चाहिए, एक वस्तुस्थिति है जिसे हम आज अपनी आँखों पर चढ़ी दूरबीन से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। कल वह निकट आ पहुँचेगी और हर कोई उसे प्रत्यक्ष देखेगा। अगले दिनों संसार का समग्र परिवर्तन करके रख देने वाला एक भयंकर तूफान विद्युत गति से आगे बढ़ता चला आ रहा है, जो इस सड़ी दुनियाँ को समर्थ, प्रबुद्ध, स्वस्थ और समुन्नत बनाकर ही शांत होगा।

अगले क्षणों जिस स्वर्णिम उषा का उदय होने वाला है, उसके स्वागत की तैयारी में हमें जुट जाना चाहिए। अपना ज्ञानयज्ञ इसी का शुभारंभ मंगलाचरण है। असुरता के पददलित और मानवता की पुण्य प्रतिष्ठापना का अपना संकल्प ईश्वरीय प्रेरणा का प्रतीक है। उसकी व्यापकता एवं सफलता सुनिश्चित है। प्रश्न केवल इतना भर है कि जिन आत्माओं में उसके लिए आवश्यक प्रकाश विद्यमान था और जिनने किसी समय ऐसे अवसरों पर आगे बढ़कर अपने शौर्य-साहस का परिचय दिया था, उन्होंने क्या किया। प्रक्रियाएँ अपने ढंग से संपन्न होनी हैं, वे परिपूर्ण होकर रहेंगी। किसी व्यक्ति के साहस या

सक्रियता की प्रतीक्षा किए बिना गति अपने पथ पर अग्रसर होती रहेगी, उठा हुआ तूफान अपने वेग से बढ़ता रहेगा। प्रश्न इतना भर है कि जिन्हें कुछ महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी थी, वे समय रहते सजग हुए या अवसाद की मूर्च्छा में पड़े हुए अपने को कलंक एवं पश्चात्ताप का भागी बनाने का दुर्भाग्यपूर्ण खेल खेलते रहे।

-अखण्ड ज्योति सितंबर 1969 पृ. 65

अज्ञान के असुर से रक्षा करें

अज्ञान की कैसी विषम घटायें चारों ओर घुमड़ रही हैं, उन्हें देखकर डर लगता है। नशेबाजी जैसे व्यसनों में लोग अपने धन, स्वास्थ्य, मन, मस्तिष्क की होली जलाते छोटे बच्चों जैसी आतिशबाजी का खेल खेल रहे हैं। कितना समय और कितना धन लोग इन विडंबनाओं पर खर्च करते हैं। तंबाकू, शराब, भाँग, गाँजा आदि का प्रचलन जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसे देखते हुए शक होता है कि जमाना कहीं पागल होने तो नहीं जा रहा है। जिन कुरीतियों और अंधविश्वासों को लोग छाती से लगाए बैठे हैं, उनसे आडंबरी धूर्तों की पाँचों घी में हैं और बेचारे निरीह लोगों का कचूमर निकला जा रहा है। भूत-पलीत, दई-देवता, टोना-टोटका के कुचक्र में अभी भी बेचारे अनपढ़ देहाती ही नहीं तथाकथित सुशिक्षित भी सिर पटकते देखे जाते हैं। रीति-रिवाजों का जंजाल पक्षियों को पकड़ने वाले जाल की तरह लोगों को बेतरह उलझाए हुए है और वे उसी गोरखधंधे में न जाने कितनी बरबादी भरी विडंबना का बोझ ढ़ोते हुए मरते-खपते रहते हैं। आज के अज्ञानग्रस्त मस्तिष्कों का यह तथाकथित शिक्षा भी कुछ सुधार नहीं कर पा रही है, यह देखकर हैरत होती है। यह विडंबना यदि बदली न जा सकी तो उलझा मनुष्य और भी अधिक जंजाली उलझनों में फँसता चला जाएगा।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1967 पृ. 39

युग निर्माण का शुभारंभ जनजागरण से

शत-सूत्री युग निर्माण योजना के अंतर्गत आज की प्रत्येक विषम परिस्थिति को बदलने के लिए प्रत्येक मोर्चे पर सुधारात्मक संघर्ष आरंभ किया जाना है। अगले दिनों एक सर्वतोमुखी अभियान सक्रिय होगा और वह आँधी-तूफान की तरह सड़ी-गली विकृत्तियों को हटाकर उसके स्थान पर स्वर्गीय संभावनाएँ विनिर्मित करेगा। आज हमें उसकी पूर्व भूमिका तैयार करनी है। कितनी ही तेजस्वी आत्माएँ प्रसुप्त एवं मूर्छित अवस्था में पड़ी हैं। वे जाग पड़ें और इस ईश्वरीय आकांक्षा की पूर्ति में अपना आवश्यक योगदान देने लगें तो जिसकी प्रतीक्षा है, उसके साकार होने में देर न लगे।

युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि है—जनजागरण। वस्तुस्थिति का आवश्यक अनुभव तथा विषमताओं को हटाने का उपयुक्त मार्गदर्शन मिलने पर विचारशील व्यक्ति सदा ही लोकमंगल के लिए बड़े-बड़े कठिन कार्य करने में तत्पर होते रहे हैं। बुद्ध, महावीर, नानक, ईसा, गाँधी आदि के आंदोलन अपने-अपने समय पर करोड़ों लोगों को आंदोलित करने में सफल हुए। कार्ल मार्क्स का साम्यवादी विचार अभियान आज लगभग आधी दुनियाँ को अपने प्रभाव क्षेत्र में ले सकने में सफल हो गया है। आध्यात्मिक आदर्शों के अनुरूप जनमानस को ढालने और स्वर्गीय सतयुगी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने का युग निर्माण आंदोलन इतनी सादगीपूर्ण संभावनाओं से ओत-प्रोत है कि यदि उसका प्रकाश जन-जन तक पहुँचाया जा सके, तो परिवर्तन की प्रक्रिया इतनी तीव्र गति से सफल हो सकती है जिसकी साधारण बुद्धि तो कल्पना भी नहीं कर सकती। युग निर्माण की पृष्ठभूमि निस्संदेह हमें जनजागरण की पुण्य-प्रक्रिया से ही आरंभ करनी होगी।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1969 पृ. 40

जनजागरण के लिए आगे आएँ

जन्मेजय द्वारा अपने पिता को काट खाने वाले सर्पों का निराकरण करने के लिए ज्ञानयज्ञ रचा गया था। अपने राष्ट्रपिता भारतवर्ष की उज्ज्वल संस्कृति की आत्मा को पतित बंना देने वाले इन कुविचार, कुसंस्कार सर्पों का निराकरण करने के लिए ज्ञानयज्ञ का आयोजन करना पड़ रहा है। इसमें होता, अध्वर्यु, यजमान, पुरोहित, ब्रह्मा और आचार्य चाहिए, ऐसे जो जनजाग्रति के लिए समय दे सकें। उपेक्षा दिखाने वाले और अरुचि प्रकट करने वालों को भी उत्कृष्ट विचारधारा के पढ़ने, सुनने तथा समझने के लिए विवश कर सकें। सच्ची लगन हो तो यह कार्य कुछ कठिन नहीं। चुनाव के दिनों में लोग वोटरों को जिस तरह फुसलाते हैं, वही हथकंड़े यदि सदुद्देश्य के लिए हम प्रयोग करने लगें तो एक भी व्यक्ति ऐसा न बचे जो नव निर्माण की विचारधारा सुनने-समझने के लिए तैयार न किया जा सके। आवश्यकता का पूरा-पूरा केंद्र-बिंदु वही है। लगनशील व्यक्ति क्या नहीं कर सकते ? युग के अनुरूप विवेकशीलता को समझने की रुचि पैदा कर लेना इतना कठिन काम नहीं है जो सच्ची लगन वाले प्रबुद्ध कार्यकर्त्ताओं के लिए भी असंभव या कष्ट संपन्न बना रहे।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1967 पृ. 40

युग साहित्य के प्रति रुचि जगाएँ

युग निर्माण योजना के अंतर्गत इन दिनों आग उगलने वाला, जन-मानस को उलट-पुलट कर रख देने वाला अत्यंत सस्ता और अत्यंत उत्कृष्ट स्तर का साहित्य सृजन किया जा रहा है, पर इसका वास्तविक लाभ तभी हो सकता है जब उसे जनसाधारण के अंतःकरण तक पहुँचने का अवसर मिले। आज लोगों में उत्कृष्ट स्तर की विचारधारा को पढ़ने, सुनने, समझने हृदयंगम करने की तनिक भी क्षमता नहीं रही। लोगों

की इस ओर जरा भी रूचि. नहीं हैं। यह रुचि पैदा करना अपना काम है। चाय और बीड़ी के प्रचारकों के अपने प्रबल प्रयत्नों ने इन गंदी चीजों को जन-जीवन का अंग बना दिया तो क्या हम 'गायत्री परिवार' के प्रबुद्ध परिजन ऐसी जन-रुचि उत्पन्न नहीं कर सकते, जिसके आधार पर सर्वसाधारण के मस्तिष्क एवं अंतःकरण उलट-पुलट कर रखे जा सकें ? यह संभव है और सर्वथा सरल है। युग की माँग यही है। आवश्यकता केवल हमारे थोड़े से त्याग और थोड़े से साहस की है। इन पंक्तियों द्वारा उसी का आव्हान किया जा रहा है।

हम अभिनव विचारों का सृजन करें, परिजन उन्हें जन-मानस में प्रवेश कराने का प्रबल प्रयत्न करें। पढ़े को पढ़ाया जाए, बेपढ़ों को सुनाया जाए तो विचारक्रांति प्रत्येक व्यक्ति के अंतःकरण में एक चिनगारी बनकर जम सकती है और देखते-देखते प्रचंड ज्वाला के रूप में परिणत हो सकती है। इंजेक्शन कैसा ही उपयोगी क्यों न हो, डॉक्टर की उँगलियाँ ही उसे रोगी के शरीर में प्रवेश करा सकती हैं। बंदूक, कारतूस कितने ही कीमती क्यों न हों चलाएगा तो उन्हें सैनिक ही। हम कितना ही प्रेरक साहित्य विनिर्मित करें, परिजनों के प्रबल प्रयास बिना वह जन-मानस में व्यापक रूप में प्रवेश न कर सकेगा। इस समस्या को हल करने के लिए परिजनों का जो भी योगदान होगा वह ज्ञानयज्ञ में महानतम पुण्य-परमार्थ ही माना जाएगा।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1967 पृ. 40-41

ज्ञान का दीपक जलता रहे

हमारा 'ज्ञानयज्ञ' इस युग का सबसे महान ऐतिहासिक अभियान है। इसमें परिवार के प्रत्येक परिजन को प्रतिस्पर्द्धापूर्वक आत्मयोग प्रदान करना चाहिए। छिटपुट अनेक पुण्य परमार्थों की बात सोचने की अपेक्षा युग की महती आवश्यकता को पूर्ण

करने वाले इस एक ही अभियान को हमें एकाग्रतापूर्वक पूर्ण करना चाहिए। संस्कृति–सीता को अज्ञान असुर के चंगुल से छुड़ाना हम रीछ-वानरों का एक ही लक्ष्य और एक ही कार्यक्रम होना चाहिए। अनेक दिशाओं में न भटकें, अपनी समस्त श्रद्धा इस एक ही बिंदु पर केंद्रित करें। हनुमान की तरह 'राम काज कीन्हे बिना, मोहि कहाँ विश्राम' की एक ही रट लगानी चाहिए और अपने को तिल-तिल जलाकर संसार में सद्ज्ञान का प्रकाश करने वाले इस ज्ञानदीप को प्रदीप्त रखने में बड़े-से-बड़ा पुरुषार्थ, बड़े-से-बड़ा त्याग-बलिदान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 38

ज्ञान की मशाल प्रज्वलित करने का उद्देश्य

जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण करने के लिए जिस विचार-क्रांति की मशाल इस ज्ञानयज्ञ के अंतर्गत जल रही है, उसके प्रकाश में अपने देश और समाज का आशाजनक उत्कर्ष सुनिश्चित है। स्वतंत्र चिंतन के अभाव ने हमें मूढ़ता और रूढ़िवादिता के गर्त में गिरा दिया। तर्क का परित्याग कर हम भेड़ियाधसान के अंधविश्वास के दलदल में फँसते चले गए। विवेक छोड़ा तो उचित-अनुचित का ज्ञान ही न रहा। गुण-दोष विवेचन की नीर-क्षीर विश्लेषण की प्रज्ञा नष्ट हो जाए तो फिर अँधेरे में ही भटकना पड़ेगा। हम ऐसी ही दुर्दशाग्रस्त विपन्नता में पिछले दो हजार वर्ष से जकड़ गए हैं। मानसिक दासता ने हमें हर क्षेत्र में दीन-हीन और निराश-निरुपाय बनाकर रख दिया है। इस स्थिति को बदले बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। मानसिक मूढ़ता में ग्रसित समाज के लिए उद्धार के सभी द्वार बंद रहते हैं। प्रगति का प्रारंभ स्वतंत्र चिंतन से होता है। लाभ में विवेकवान रहते हैं। समृद्धि साहसी के पीछे चलती है। इन्हीं सत्प्रवृत्तियों का

जनमानस में बीजारोपण और अभिवर्द्धन करना अपनी 'विचार-क्रांति' का एकमात्र उद्देश्य है। ज्ञान की मशाल इसी दृष्टि से प्रज्वलित की गई है।

-अखण्ड ज्योति सितंबर 1969 में पृ. 60

ज्ञानयज्ञ की मशाल प्रज्वलित रखना हमारा दायित्व

परिजनों को अपनी जन्म-जन्मांतरों की उस उत्कृष्ट सुसंस्कारिता का चिंतन करना चाहिए, जिसकी परख से उन्हें अपनी माला में पिरोया है। युग की पुकार, जीवनोद्देश्य की सार्थकता, ईश्वर की इच्छा और इस ऐतिहासिक अवसर की स्थिति, महामानव की भूमिका को ध्यान में रखते हुए कुछ बड़े कदम उठाने की बात सोचनी चाहिए। इस महा अभियान की अनेक दिशाएँ हैं, जिन्हें पैसे से, मस्तिष्क से, श्रम-सीकरों से सींचा जाना चाहिए। जिसके पास जो विभूतियाँ हैं, उन्हें लेकर महाकाल के चरणों में प्रस्तुत होना चाहिए। लोभ-मोह की अज्ञान और अंधकार की तमिस्रा को चीरते हुए हमें आगे बढ़ना चाहिए और अपने पास जो हो उसका न्यूनतम भाग अपने और अपने परिवार के लिए रखकर शेष को विश्वमानव के चरणों में समर्पित करना चाहिए। नवनिर्माण की लाल मशाल में हमने अपने अस्तित्व का तेल टपकाकर उसे प्रकाशवान रखा है, अब परिजनों की जिम्मेदारी है कि वे उसे जलती रखने के लिए हमारी ही तरह अपने अस्तित्व के सारतत्त्व को टपकाएँ। परिजनों पर यही कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व छोड़कर इस आशा के साथ हम विदा हो रहे हैं कि महानता की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रवृत्ति अपने परिजनों में घटेगी नहीं, बढ़ेगी ही।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 61

ज्ञानयज्ञ की लपटें आकाश छूएँगी

हमें अपना विचार-क्षेत्र बढ़ाना है। अब तक केवल अखण्ड ज्योति और युग निर्माण योजना पत्रिका से ही अपना संपर्कक्षेत्र विनिर्मित करते रहे हैं। जो इन्हें पढ़ते हैं, उन्हीं तक अपने विचार पहुँचते हैं। इस छोटे वर्ग से ही समस्त विश्व को परिवर्तित करने का स्वप्न साकार नहीं हो सकता। हमें प्रसार के लिए बड़े कदम उठाने होंगे। झोला पुस्तकालय प्रक्रिया इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए है। हर परिजन से इसमें आवश्यक रस लेने और उत्साहपूर्वक प्रयत्न करने को अनुरोध किया गया है। समय के साथ अपनी गाढ़ी कमाई का एक छोटा अंश लोकमंगल के इस छोटे दीखने वाले, किंतु अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए खरच करने को कहा गया है। व्यक्ति को अपने लिए ही नहीं कमाते रहना चाहिए। उसकी कमाई में समाज का भी अधिकार है। इस अधिकार को संतुलित बनाने के लिए दान को एक अनिवार्य धर्म-कर्त्तव्य माना गया है। जो दान नहीं करता, अपनी कमाई आप ही खाता रहता है, उसे मनीषियों और शास्त्रों ने चोर माना है। हमारा कोई परिजन चोर न कहलाएगा, उसे दानी ही बनना चाहिए और दान की सार्थकता तभी है, जब उसके पीछे उपयोगिता और विवेक का पुट हो। सद्ज्ञान प्रसार करके जनमानस को बदलने से बढ़कर दान की और कहीं सार्थकता हो नहीं सकती। यह ब्रह्मदान सबसे बड़ा परमार्थ है। इसलिए परिजनों को यथाशक्ति अंशदान के लिए, महीने में एक दिन की आमदनी खरच करते रहने के लिए कहा गया है। यदि यह बात समझ में आ सके और थोड़ा समय एवं थोड़ा पैसा सभी लोग नियमित रूप से खरच करने लगें तो अपने ज्ञानयज्ञ की लपटें आकाश को छूने लगेंगी और पाताल तक को प्रभावित करने लगेंगी। बहुत जोर देकर यह कहा जा रहा

है कि यह पंक्तियाँ पढ़कर ही पुस्तक उठाकर एक कोने में न रख दी जाए वरन कुछ करने के लिए आवश्यक साहस और उत्साह पैदा किया जाए। विश्वास यही किया जाना चाहिए कि अपने अति आवश्यक अनुरोध कभी उपेक्षित नहीं किए गए हैं और इस बार भी ज्ञानयज्ञ की हमारी संकलित प्रक्रिया को अधूरी न रहने दिया जाएगा। उसके लिए भी स्वजनों में आवश्यक उत्साह पैदा होगा और नवनिर्माण की विचारधारा विश्वव्यापी होकर रहेगी। यह विचारधारा और जनमानस को प्रबुद्धता की दिशा में घसीट ले जाने की प्रक्रिया अखण्ड ज्योति परिवार, गायत्री परिवार अथवा युग निर्माण योजना के कुछ लाख सदस्यों तक सीमित नहीं रहने दी जा सकती। इसे देशव्यापी, विश्वव्यापी बनाना है। इसके लिए एक भाषा की सीमाबद्धता भी पर्याप्त नहीं। अब तक अपने पास केवल हिंदी माध्यम रहा है। अब भारत की सभी प्रमुख भाषाओं और बोलियों में अपना कर्मक्षेत्र बढ़ाना पड़ेगा। इतना ही नहीं, संसार की प्रमुख भाषाओं का भी सहारा लेना पड़ेगा ताकि अपना संदेश भारतवर्ष तक ही सीमित न रहकर विश्वव्यापी बन सके। सभी प्रचार साहित्य अब हमें इन सभी भाषाओं में प्रकाशित-प्रचारित करना है। इसके लिए पूँजी की जरूरत पड़ेगी। जिनमें सामर्थ्य और उदारता हो इस महत् प्रयोजन के लिए कुछ अनुदान देने का साहस कर सकते हैं। ज्ञानयज्ञ से बढ़कर दानशीलता को चरितार्थ करने का और कोई माध्यम शायद ही इस संसार में दूसरा होता है।

-अखण्ड ज्योति सितंबर 1969 पृ. 64

विचारक्रांति पर ध्यान एकाग्र करें

हमारा परामर्श यह है कि पुण्य-परमार्थ की अंतश्चेतना यदि मन में जागे तो उसे सस्ती वाहवाही लूटने की मानसिक दुर्बलता से टकराकर चूर-चूर न हो जाने दिया जाए। आमतौर

से लोगों की ओछी प्रवृत्ति नामवरी लूटने का ही दूसरा नाम पुण्य मान बैठती है और ऐसे काम करती है, जिनकी वास्तविक उपयोगिता भले ही नगण्य हो, पर उनका विज्ञापन अधिक हो जाए। मंदिर, धर्मशाला बनाने आदि प्रयत्नों को हम इसी श्रेणी का मानते हैं। वे दिन लद गए जबकि मंदिर जनजाग्रति के केंद्र रहा करते थे। वे परिस्थितियाँ चली गई जब धर्मप्रचारकों और पैदल यात्रा करने वाले पथिकों के लिए विश्रामगृहों की आवश्यकता पड़ती थी। अब व्यापारिक या शादी-ब्याह संबंधी स्वार्थपरक कामों के लिए लोगों को किराया देकर ठहरना या ठहराना ही उचित है। मुफ्त की सुविधा वे क्यों लें और क्यों दें। कहने का तात्पर्य यह है कि इस तरह के विडंबनात्मक कामों से शक्ति का अपव्यय बचाया जाना चाहिए और उसे जनमानस के परिष्कार कर सकने वाले कार्यों की एक ही दिशा में लगाया जाना चाहिए। हमें नोट कर लेना चाहिए कि आज की समस्त उलझनों और विपत्तियों का मात्र एक ही कारण है—मनुष्य की विचार विकृति। दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों ने ही शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, राजनीतिक संकट खड़े किए हैं। बाह्य उपचारों से पत्ते सींचने से कुछ बन नहीं पड़ेगा, हमें मूल तक जाना चाहिए और जहाँ से संकट उत्पन्न होते हैं, उस छेद को बंद करना चाहिए। कहना न होगा कि विचारों और भावनाओं का स्तर गिर जाना ही समस्त संकटों का केंद्रबिंदु है। हमें इसी मर्मस्थल पर तीर चलाने चाहिए। हमें ज्ञानयज्ञ और विचार-क्रांति को ही इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता एवं समस्त विकृतियों की एक मात्र चिकित्सा मानकर चलना चाहिए और उन उपायों को अपनाना चाहिए जिनसे मानवीय विचारणा एवं आकांक्षा को निकृष्टता से विरत कर उत्कृष्टता का स्तर उन्मुख किया जा सके। ज्ञानयज्ञ की सारी योजना इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाई गई है। हमें अर्जुन को लक्ष्य भेदते

समय मछली की आँख देखने की तरह केवल युग की आवष्यकता विचार-क्रांति पर ही ध्यान एकत्रित करना चाहिए और केवल उन्हीं परमार्थ प्रयोजनों को हाथ में लेना चाहिए, वही ज्ञानयज्ञ के पुण्य-प्रयोजन पूरा कर सकेगा। अन्यान्य कार्यक्रमों से हमें अपना मन बिलकुल हटा लेना चाहिए, शक्ति बखेर देने से कोई काम पूरा नहीं हो सकता। हमारा परामर्श परिजनों को यही है कि वे परमार्थ भावना से सचमुच कुछ करना चाहते हों तो उस कार्य को हजार बार इस कसौटी पर कस लें कि इस प्रयोग से आज की मानवीय दुर्बुद्धि को उलटने के लिए अभीष्ट प्रबल पुरुषार्थ की पूर्ति होती है या नहीं। शारीरिक सुख-सुविधाएँ पहुँचाने वाले धर्म-पुण्यों को अभी कुछ समय रोका जा सकता है, वे पीछे भी हो सकते हैं, पर आज की तात्कालिक आवश्यकता तो विचार-क्रांति एवं भावनात्मक नवनिर्माण ही है, सो उसी को आपत्तिधर्म-युगधर्म मानकर सर्वतोभावेन हमें उसी प्रयोजन में निरत हो जाना चाहिए। ज्ञानयज्ञ के कार्य इमारतों की तरह प्रत्यक्ष नहीं दीखते और स्मारक की तरह वाहवाही का प्रयोजन पूरा नहीं करते तो भी उपयोगिता की दृष्टि से ईंट-चूने की इमारतें बनाने की अपेक्षा इन भावनात्मक परमार्थों का परिणाम लाख-करोड़ गुना अधिक है। हमें वाहवाही लूटने की तुच्छता से आगे बढ़कर वे कार्य हाथ में लेने चाहिए जिनके ऊपर मानवजाति का भाग्य और भविष्य निर्भर है। यह प्रक्रिया ज्ञानयज्ञ का होता–अध्वर्यु बने बिना और किसी तरह पूरी नहीं होती।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 58-59

दुर्बुद्धि हटाएँ-सद्बुद्धि लाएँ

व्यक्ति और समाज के सामने आज अगणित समस्याएँ, उलझनें और कठिनाइयाँ मौजूद हैं। इन्हें सामयिक उपायों से

हल नहीं किया जा सकता है। समस्त कठिनाइयों का एक ही उद्‌गम है–मानवीय दुर्बुद्धि। इसे हटाए बिना एक भी समस्या हल न होगी और न एक भी कठिनाई का समाधान निकलेगा। कानूनों और प्रतिबंधों से, संघर्ष और युद्धों से दुष्टता को रोका नहीं जा सकेगा। उसका आध्यात्मिक स्तर पर ही समाधान संभव है। जिस उपाय से दुर्बुद्धि को हटाकर सद्‌बुद्धि स्थापित की जा सके, वही मानव कल्याण का, विश्वशांति का समाधानकारक मार्ग हो सकता है।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 33

ज्ञानयज्ञ इस युग की प्रथम आवश्यकता

हमें विश्वव्यापी ऐसा विचारक्रांति-अभियान खड़ा करना होगा जिससे मनुष्य को अपनी दुर्बुद्धि को समझने और उसके द्वारा होने वाली अपार हानि का अनुमान लगाने का अवसर मिले। अब तक परंपरा के नाम पर, धर्म संप्रदाय के नाम पर लोग प्राचीन ढर्रे का पक्षपात एवं समर्थन करने के आदी रहे हैं। स्वतंत्र विचारधारा के लिए, विवेक पूजा के लिए अवसर नहीं आने दिया गया। जो ढर्रा चल रहा है, उसी में बहते रहने में लोगों ने सरलता समझी है और जिसका अभ्यास है, उसी को उत्तम माना है। यह बौद्धिक गुलामी चिरकाल से हमारे मस्तिष्कों को आच्छादित किए हुए है, फलतः विवेकबुद्धि इतनी कुंठित हो गई है कि सत्य-असत्य और उचित-अनुचित का सही निर्णय कर सकना कठिन हो गया है। इस दुःखद मनःपरिस्थिति का अंत किए बिना प्रस्तुत पतन-प्रक्रिया से, सर्वनाश की विभीषिका से छुटकारा न मिल सकेगा।

युग की इस महती आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए 'युग निर्माण योजना' का प्रथम चरण 'ज्ञानयज्ञ' के रूप में प्रस्तुत हुआ है। इस अभियान के अंतर्गत हर व्यक्ति को स्वतंत्र चिंतन के लिए आमंत्रित किया जाएगा। उसे कहा

जाएगा कि समस्त पूर्वाग्रहों को छोड़कर, सत्य-असत्य की, उचित-अनुचित की कसौटी पर आज की प्रत्येक विचारणा, मान्यता, रीति-नीति एवं गतिविधि को परखें और केवल उसे स्वीकार करें जो विवेकसम्मत हो, न्यायसंगत एवं सचाई पर आधारित हो। जो अनुपयुक्त है, असंगत है और अविवेकपूर्ण है उसे छोड़ दें, भले ही वह किसी के द्वारा प्रतिपादित क्यों न हो। यही इस युग की वह विचार-क्रांति है जिसके आधार पर नई सुख-शांति भरी दुनिया का अभिनव निर्माण संभव होगा।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 33

ज्ञानयज्ञ अश्वमेध का रूप धारण करेगा

'ज्ञानयज्ञ' से परिष्कृत मनोभूमि अपनी एक संघर्ष भूमिका प्रस्तुत करेगी। सड़ी-गली जीर्णता अपने विकृत रूप में जहाँ कहीं जड़ जमाए बैठी होगी, वहाँ से उसे उठाकर फेंकने के लिए एक और कदम बढ़ाना पड़ेगा। 'ज्ञानयज्ञ' से प्रभाव ग्रहण करने की क्षमता केवल संस्कारवान व्यक्तियों में ही होती है। जिनमें जड़ता और दुष्टता मजबूती से जड़ जमाए बैठी है, वे न इस प्रभाव को ग्रहण करते हैं और न बदलते हैं। उनके भाग्य में दुर्गति ही लिखी है। इन करालकाल की दाढ़ों में चिपके हुए मरणधर्मा सभी प्राणियों पर महाकाल का प्रकोप होना है और उनकी लाशों को ठिकाने लगाने का कार्य आखिर इन प्रबुद्ध व्यक्तियों को ही करना है। एक देवासुर संग्राम फिर होगा। गुर्राने वाली असुरता का मुँह तो तोड़ा ही जाएगा। न बदलने के लिए आग्रह किए बैठे लोगों को युग के अनुरूप बदलने के लिए विवश किया ही जाएगा। इसमें हाथा-पाई होनी ही है। 'ज्ञानयज्ञ' अंत में एक ऐसे अश्वमेध का रूप धारण करेगा जिससे समस्त दुर्बुद्धि और दुष्टता का तिरोधान हो जाए।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 36

ज्ञान गंगा के अवतरण के लिए भगीरथों की आवश्यकता

यदि मानव का वर्तमान चिंतन क्रम न बदला जा सका तो इस जगती का सर्वनाश होकर रहेगा। संसार में सुख-शांति स्थापना के समस्त प्रयास तब तक निरर्थक-निष्फल ही सिद्ध होते रहेंगे जब तक कि जनमानस की वर्तमान दिशा को उलटी से सीधी न किया जाएगा।

समस्त विकृतियों, कुंठाओं, शोक-संतापों, द्वंद्व-संघर्षों, अभाव-अपराधों, रोग-क्षोभों का एकमात्र कारण हमारे चिंतन क्रम का कलुषित हो जाना है। दुष्ट चिंतन समस्त विग्रहों का मूल है। सारी विकृतियाँ दुर्बुद्धि ही उत्पन्न करती है। अवांछनीय विचारणा ही है जो नरक की परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है। समस्त सुविधाएँ होने पर भी यदि विचारपद्धति सही नहीं हो तो व्यक्ति केवल दुःख पाता रहेगा और संबंधित लोगों को दुःख देता रहेगा। हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय विपन्नताओं का कारण और कुछ नहीं केवल लोकमानस की अशुद्ध दिशा ही है। यदि भूल के कारणों को न सुधारा गया तो सुधारों के समस्त प्रयत्न जड़ सूखती जाने वाले पेड़ के पत्ते सींचने जैसी विडंबना सिद्ध होंगे। इसलिए यदि वस्तुतः वर्तमान विपन्नताओं का समाधान ढूँढ़ना हो तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि संसार की, विशेषतया भारतवर्ष की चिंतनपद्धति को परिष्कृत करना आवश्यक है। नैतिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान केवल इस एक आधार पर संभव है। विश्वशांति का उसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। एक सर्वतोमुखी विचार-क्रांति इस युग की सर्वप्रमुख आवश्यकता है। इसे चाहे आज संपन्न किया जाय चाहे हजार वर्ष बाद, रास्ता इसके अतिरिक्त दूसरा है ही नहीं। समस्या की जड़ तक पहुँचने और सही हल ढूँढनें का जब भी

प्रयत्न किया जाएगा केवल एक ही निष्कर्ष निकलेगा, केवल एक ही मार्ग सूझेगा कि जनमानस की वर्तमान विचारपद्धति में स्वतंत्र चिंतन और विवेक के तत्त्व इतनी मात्रा में मिला दिए जाएँ कि हर बात पर गुण-दोष की दृष्टि से विचार करने और हर कार्य को उचित-अनुचित की कसौटी पर कसकर अपनाने का साहस सजीव हो सके। आज हम परंपराओं, मूढ़ विश्वासों, दुराग्रहों और अन्य अनुकरणों को अपनाकर अपनी जीवन दिशा निर्धारित करते हैं। यदि विवेक और औचित्य को कसौटी मानें तो तीन चौथाई मान्यताएँ और रीति-नीतियाँ बदलने एवं सुधारने को विवश होना पड़ेगा। इस विवशता को स्वेच्छा सुधार की प्रक्रिया में परिणत कर देने वाले प्रचंड प्रयास को विचार-क्रांति भी कहा जा सकता है। नाम जो भी हो नारकीय वर्तमान परिस्थितियों को भावी सतयुग के रूप में बदल देने का उपाय केवल यही एक है। आज इसी ज्ञानगंगा का अवतरण करने के लिए भगीरथ प्रयत्नों की आवश्यकता है। हमें झूठे मनः संतोष के लिए छिटपुट ढाई ईंट की मसजिद चुनने और ड़ेढ़ चावल की खिचड़ी पकाने में नहीं लगना चाहिए वरन मिल-जुलकर एक ही दिशा में एक ही प्रयत्न करना चाहिए, जिससे सर्वतोमुखी सुधार-क्रम की आवश्यकता पूरी हो सके।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1969 पृ. 7-8

ज्ञानयज्ञ को विश्वव्यापी बनाने का संकल्प

अब हम सर्वनाश के किनारे पर बिलकुल आ खड़े हुए हैं। कुमार्ग पर जितने चल लिए उतना ही पर्याप्त है। अगले कुछ ही कदम हमें एक दूसरे का रक्तपान करने वाले भेड़ियों के रूप में बदल देंगे। अनीति और अज्ञान से ओत-प्रोत समाज सामूहिक आत्महत्या कर बैठेगा। अब हमें पीछे लौटना होगा।

सामूहिक आत्महत्या हमें अभीष्ट नहीं। नरक की आग में जलते रहना हमें अस्वीकार है। मानवता को निकृष्टता के कलंक से कलंकित बनी न रहने देंगे। पतन और विनाश हमारा लक्ष्य नहीं हो सकता। दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्तियों को सिंहासन पर विराजमान रहने देना सहन न करेंगे। अज्ञान और अविवेक की सत्ता शिरोधार्य किए रहना अब अशक्य है। हम इन परिस्थितियों को बदलेंगे, उन्हें बदलकर ही रहेंगे। शपथपूर्वक परिवर्तन के पथ पर हम चले हैं और जब तक सामर्थ्य की एक बूँद भी शेष है, तब तक चलते ही रहेंगे। अविवेक को पदच्युत करेंगे। जब तक विवेक को मूर्द्धन्य न बना लेंगे, तब तक चैन न लेंगे। उत्कृष्टता और आदर्शवादिता की प्रकाश किरणें हर अंतःकरण तक पहुँचाएँगे और वासना एवं तृष्णा के निकृष्ट दलदल से मानवीय चेतना को विमुक्त करके रहेंगे। मानव समाज को सदा के लिए दुर्भाग्यग्रस्त नहीं रखा जा सकता, उसे महान आदर्शों के अनुरूप ढलने और बदलने के लिए बलपूर्वक घसीट ले चलेंगे। पाप और पतन का युग बदला जाना चाहिए, उसे बदलकर रहेंगे। इसी धरती पर स्वर्ग का अवतरण और इसी मानव प्राणी में देवत्व का उदय हमें अभीष्ट है और इसके लिए भगीरथ तप करेंगे। ज्ञान की गंगा को भूलोक पर लाया जाएगा और उसके पुण्य जल में स्नान कराके कोटि-कोटि नर-पशुओं को नर-नारायणों में परिवर्तित किया जाएगा। इसी महान शपथ और व्रत को ज्ञानयज्ञ के रूप में परिवर्तित किया गया है। विचार-क्रांति की आग में गंदगी का कूड़ा-करकट जलाने के लिए होलिका-दहन जैसा अपना अभियान है। अनीति और अनौचित्य के गलित कुष्ठ से विश्वमानव का शरीर विमुक्त करेंगे। समग्र कायाकल्प का, युग परिवर्तन का लक्ष्य पूरा ही किया जाएगा। ज्ञानयज्ञ की

चिनगारियाँ विश्व के कोने-कोने में प्रज्वलित होंगी। विचार-क्रांति का ज्योतिर्मय प्रवाह जन-जन तक के मन को स्पर्श करेगा।

-अखण्ड ज्योति अक्टूबर 1969 पृ. 57

ज्ञानयज्ञ से जी न चुराएँ

इस विदाई की वेला में हम दो उत्तरदायित्व प्रिय परिजनों को सौंपकर जा रहे हैं। (1) ज्ञानयज्ञ में निरंतर आहुति देते रहने से कोई जी न चुराएँ। (2) युग परिवर्तन के लिए अनिवार्य संघर्ष में अपना भाग पूरा करने से मुख न छिपाएँ। जो हमें प्यार करते हों, हमारे प्रति ममता और आत्मीयता सचमुच ही रखते हों, वे यह दोनों ही बातें नोट कर लें। हम हर परिजन की वास्तविकता इसी कसौटी पर कसकर परखते रहेंगे।

नवनिर्माण के लिए आवश्यक विचारधारा हमने अपने अंतरंग का निर्झर खोदकर प्रवाहित की है, उससे जन-जन के मन को सींचने का कार्य हमारे उत्तराधिकारी करेंगे। विचार-क्रांति की मशाल हम उन्हें दे रहे हैं, जो अपनों से अपनी बात ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं। यह मशाल जलती रहनी चाहिए, यह प्रकाश दूर-दूर तक फैलता रहना चाहिए। ऐसा न हो कि सहयोग का स्नेह न पाकर हमारी यह अमानत अपना अस्तित्व खो बैठे। साहित्य में हमने अपना दरद भर दिया है, उसे हर हृदय और मस्तिष्क में बोया, उगाया जाना चाहिए। जिसकी जहाँ तक पहुँच हो, अपने घर-परिवार से लेकर मित्र- परिचितों तक उस विचारधारा को पहुँचाया-फैलाया जाना चाहिए। झोला पुस्तकालय हर कर्मठ व्यक्ति को पूरी लगन और तत्परता के साथ चलाना चाहिए। अखण्ड ज्योति हमारी वाणी है। हमारी आवाज अधिक लोगों तक पहुँच सके, इसके लिए अपने प्रभाव और

दबाव का उपयोग किया जाना चाहिए। अखण्ड ज्योति अभी बहुत सीमित संख्या में छपती है। उसका क्षेत्र बढ़ाना चाहिए। यदि सचमुच हम उसे प्यार करते हों तो फिर बढ़ाने और सींचने के लिए कुछ परिश्रम भी करें।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1969 पृ. 65

ज्ञानयज्ञ सबसे बड़ा परमार्थ

हमारा ज्ञानयज्ञ इस युग का सबसे बड़ा परमार्थ है। युग की आवश्यकता इसी से पूर्ण होगी। अभी इस अभियान को अखण्ड ज्योति परिजनों के माध्यम से आरंभ किया गया है, उन्हें ही इसका होता, यजमान, अध्वर्यु, उद्‌गाता और आचार्य बनने के लिए आमंत्रित किया गया है। आरंभिक ढाँचा इसी रूप में खड़ा किया जा रहा है, किंतु क्रमशः यह आगे बढ़ेगा और समस्त विश्व के प्रत्येक नागरिक को इसमें सम्मिलित होने के लिए विवश किया जाएगा।

जिस प्रकार ईसाई धर्मप्रचारकों ने अपने मंतव्य को विश्वव्यापी बनाने और जनमानस में उतारने के लिए बाइबिल तथा उसके लूका, वृहन्ना, मत्तीमार्कस आदि अध्यायों को अत्यंत सस्ते मूल्य में करोड़ों की संख्या में छापा था, उसी तरह जीवन साहित्य के निर्माण ही नहीं प्रचार की भी व्यवस्था 'ज्ञानयज्ञ' के अंतर्गत की जानी है। लेखन-कार्य तीव्रगति से परिपूर्ण साहस और उत्तरदायित्व के साथ चल रहा है। 'अखण्ड ज्योति' तथा 'युग निर्माण योजना' पत्रिकाएँ अपना काम जादू की तरह कर रही हैं।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 34

ज्ञानयज्ञ से व्यक्तित्ववान आत्माओं का निर्माण

हमारे 'ज्ञानयज्ञ' को इस युग का, इस शताब्दी का, सहस्राब्दी का सबसे महत्त्वपूर्ण, सबसे महान एवं सबसे व्यापक

अभियान कहा जा सकता है। यों धन एवं प्रदर्शन की दृष्टि से इसका रूप सामान्य ही है, पर आज आरंभिक स्थिति में भी, लाखों व्यक्ति इसके संपर्क में हैं और अपनी, अपने परिवार की तथा अन्य अनेकों की विचारधारा को उलट-पुलट करने में संलग्न हैं। यह एक ध्रुव सत्य है कि विचार बदलने के साथ मनुष्य के कार्य भी बदलते हैं। जो शक्तियाँ आज आसुरी एवं ध्वसंक बनी हुई हैं, वे यदि कल दैवी एवं रचनात्मक बन जाएँ तो विनाश के स्थान पर निर्माण की, नरक के स्थान पर स्वर्ग की गतिविधियाँ परिलक्षित होंगी।

इमारतें और कारखाने बनाना सरल है। स्कूल और बाँध भी थोड़ी अर्थव्यवस्था हो जाने पर आसानी से बन सकते हैं। असली काम व्यक्ति निर्माण का है जो जितना ही कठिन है, उतना ही महत्त्वपूर्ण भी है। ताजमहल बनाने वाले शाहजहाँ की तुलना में समर्थ गुरु रामदास द्वारा शिवाजी का निर्माण अधिक महत्त्वपूर्ण है। गांधी की तुलना टाटा के लोह संस्थानों से नहीं की जा सकती। निजाम का सारा स्वर्णकोष लोकमान्य तिलक के मूल्य से बढ़कर नहीं हो सकता। किसी समाज की असली संपत्ति उसके चरित्रवान, मनस्वी और परमार्थपरायण व्यक्ति ही होते हैं। वे ही करोड़ों जीवनों को प्रभावित करते, वातावरण को बदलते और अंधकार में प्रकाश उत्पन्न करते हैं। ऐसे सत्पुरुषों का निर्माण कार्य जिस संस्थान द्वारा होता है, उसे इस धरती पर अवतरित देवदूत ही माना जाएगा। इस दृष्टि से अपना 'ज्ञानयज्ञ'एक ऐसा ही ऐतिहासिक अनुदान है, जिसे भावी पीढ़ियाँ लाखों वर्षों तक विस्मरण न कर सकेंगी।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 35-36

ज्ञानयज्ञ का प्रभाव सभी देखेंगे

ज्ञानयज्ञ' का अभी आरंभकाल है। उसमें से अग्नि की लपटें फूटने लगी हैं। अभी उसे विश्वव्यापी ऐसे प्रचंड दावानल का रूप धारण करना शेष है, जिसकी आग में मानव समाज के समस्त पाप-ताप जल जाएँ और शुद्ध स्वर्ण जैसी कांतिमान होकर वह विश्वमंगल का नया सूत्रपात कर सके। यह सब कुछ कुतूहलवर्द्धक, प्रचार कार्य नहीं वरन् मनोभूमि का परिवर्तन है जो व्यक्तियों को कुछ सुझाव मात्र नहीं देगा वरन उनकी जीवन दिशा और क्रियापद्धति को ही पलटकर रख देगा। आज जो भारभूत, निकम्मे व्यक्ति दीखते हैं, कल वे ही एक-से-एक बढ़-चढ़कर महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ प्रस्तुत करेंगे, ऐसा होगा अपने 'ज्ञानयज्ञ' का प्रभाव। यह कल्पना नहीं, सचाई है, जिसे कुछ ही वर्षों में हर कोई अपनी इन्हीं आँखों से मूर्तिमान प्रत्यक्ष देख सकेगा।

-अखण्ड ज्योति दिसम्बर 1967 पृ. 36

समस्त समस्याओं का समाधान--ज्ञानयज्ञ

क्या करें ? इस प्रश्न का इन दिनों एक ही उत्तर है--विचार-क्रांति के युगधर्म का परिपालन करने के लिए एकनिष्ठ भाव से जुट पड़ें। आज की समस्याएँ अगणित हैं। उनके स्वरूप और प्रतिफल भी भिन्न-भिन्न हैं, किंतु यह मानकर चलना होगा कि सभी का निमित्त कारण एक है--चिंतन में विकृतियों का भर जाना। आस्था संकट ही अपने युग का सबसे बड़ा विनाश का कारण है। इससे बड़ा दुर्भिक्ष और कोई हो नहीं सकता। निराकरण का उपाय भी एक ही है--उलटे को उलटकर सीधा करना। यदि लोकमानस को परिवर्तित--परिष्कृत किया जा सके तो हर समस्या सरलतापूर्वक

सुलझने लगेगी। नाली की कीचड़ साफ किए बिना मक्खी-मच्छरों से पीछा छूटना कठिन है। हमें युगधर्म के रूप में विचार-क्रांति को ही मान्यता देनी चाहिए और छिटपुट कार्यों में ध्यान बँटाने, शक्ति खपाने की अपेक्षा इसी काम में जुट जाना चाहिए। इस मंत्र को गुनगुनाते रहना चाहिए कि 'एकहि साधे सब सधे-सब साधे सब जाय।' नाम और यश को प्रधानता देने वाले, अपनी ढाई ईंट की मसजिद अलग खड़ी करने को आतुर दृष्टिगोचर होते हैं। डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग से पकाते तो हैं, पर उसमें पेट किसी का नहीं भरता, ढिंढोरा भर पिट जाता है। जिन्हें अपना ढिंढोरा पिटवाना ही अभीष्ट हो, वे चित्र-विचित्र योजनाएँ बनाते और सेवा के नाम पर कौतुक-कुतूहल खड़े करते रहें, पर जिन्हें एक ही ताली से सब ताले खोलने का मन हो, वे विचार परिवर्तन के कार्य को सर्वोपरि मानकर उसी को लक्ष्य रखें और उसी से संबंधित्त कार्यों में हाथ डालें।

समय के कुप्रभाव से इन दिनों कोई व्यक्ति लोभ और मोह की परिधि से बाहर एक कदम नहीं रखता और पूजा-पाठ से लेकर व्यवसाय—अपराध तक इसी निमित्त करता है। समय के परिवर्तन का प्रत्यक्ष चिन्ह यहाँ से प्रकट होना चाहिए कि सब न सही जाग्रत आत्माओं में से जो जीवंत हों, वे समय को समझें और व्यामोह के दायरे से निकलकर बाहर आएँ। उन्हीं के बिना प्रगति का रथ रुका पड़ा है।

-अखण्ड ज्योति जून 1984 पृ. 61

ज्ञानयज्ञ में सभी सहयोग कर सकते हैं

यों चाहे तो हममें से साधारण और गरीब स्तर के लोग भी 'ज्ञानयज्ञ' को अपने बच्चों में एक और बच्चा गिन सकते हैं और जितना पालन-पोषण एक बच्चे के लिए करना पड़ता है, उसे इस परमार्थ कार्य के लिए लगाते रह सकते हैं। बात

हिम्मत करने और उदारता लाने भर की है। यों तो 'अखण्ड ज्योति' का चंदा भेजने में भी कई को आर्थिक कठिनाई का बहाना करना पड़तां है, पर यदि दिल में गुंजाइश हो तो गरीब लोग भी उतना कर सकते हैं, जिससे अमीरों की आँख नीची हो जाए।

युग निर्माण योजना के शतसूत्री, ज्ञानयज्ञ के चार सूत्री कार्यक्रमों को व्यापक बनाने के लिए प्रचारकों, साहित्यकारों, कलाकारों, नेताओं, अभिनेताओं, वक्ताओं, संगठनकर्त्ताओं, लेखकों, अध्यापकों एवं कार्यकर्त्ताओं की हजारों-लाखों की संख्या में आवश्यकता है। रोटी-कपड़े का प्रबंध हो सके तो कर्मवीरों की यह बड़ी सेना सहज ही खड़ी की जा सकती है। जो लोग स्वयं क्षेत्र में काम करने नहीं जा सकते, वे कार्यकर्त्ताओं की रोटी का प्रबंध करके उन्हें अपने प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने के लिए छोड़ सकते हैं। हो बहुत कुछ सकता है, होना भी चाहिए। हम गायत्री परिवार के धनी-निर्धन भी बहुत कुछ कर सकते हैं, पर हत्यारी संकीर्णता कुछ करने दे तब न। आशा है और प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रबुद्ध परिजनों की अंतरात्मा उन्हें झकझोर कर कुछ कहेगी और 'ज्ञानयज्ञ' के महान अभियान का हर पहलू अपने ढंग से विकास करता चला जाएगा।

-अखण्ड ज्योति दिसंबर 1967 पृ. 39

पढ़ें-सुनें ही नहीं, कुछ करें भी

हमारी इन दिनों अभिलाषा यह है कि अपने स्वजन-परिजनों को नवनिर्माण के लिए कुछ करने के लिए कहते-सुनते रहने का अभ्यस्त मात्र न बना दें, वरन कुछ तो करने के लिए उनमें सक्रियता पैदा करें। थोड़े कदम तो उन्हें चलते-चलाते अपनी आँखों से देख लें। हमने अपना सारा जीवन जिस मिशन के लिए तिल-तिल जला दिया, जिसके लिए हम

आजीवन प्रकाष-प्रेरणा देते रहे, उसका कुछ तो सक्रिय स्वरूप दिखाई देना ही चाहिए। हमारे प्रति आस्था और श्रद्धा व्यक्त करने वाले क्या हमारे अनुरोध को भी अपना सकते हैं ? क्या हमारे पदचिन्हों पर कुछ दूर चल सकते हैं ? देखा यह भी जाना चाहिए ताकि हम देख सकें कि हम सच्चे साथियों के रूप में परिवार का सृजन करते रहे अथवा शेखचिल्ली जैसी कल्पना के महल गढ़ते रहे ? इस परख में वस्तुस्थिति सामने आ जाएगी और हम अपने परिवार के साथ जोड़े हुए प्रश्नों की यथार्थता- निरर्थकता के संबंध में किसी सुरक्षित निष्कर्ष पर पहुँच जाएँगे।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1969 पृ. 8-9

कर्मठों का संगठन आवश्यक

योजना का दूसरा चरण संगठनात्मक है। भीड़ का संगठन बेकार है। मुर्दो का पहाड़ इकट्ठा करने से तो बदबू ही फैलेगी। जिनके मन में कसक है, जो वस्तुस्थिति को समझ चुके हैं, उन्हीं का एक महान प्रयोजन के लिए एकत्रीकरण वास्तविक संगठन कहला सकता है। गायत्री परिवार संगठन में अब वे ही लोग लिए जा रहे है जो ज्ञानयज्ञ के लिए अंशदान-समयदान देने के लिए निष्ठा और तत्परता दिखाने लगे हैं। कर्मठ लोगों का संगठन बन जाने पर प्रचारात्मक अभियान को संतोषजनक स्तर तक पहुँचा देने पर ऐसी स्थिति आ जाएगी कि जो अति महत्त्वपूर्ण होगी। इन दिनों जो कार्यशक्ति एवं स्थिति के अभाव में कर नहीं पा रहे हैं, वे आसानी से किए जा सकें।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 60

भावी महाभारत लड़ेंगे युग निर्माणी

दुष्टता की दुष्प्रवृत्तियाँ कई बार इतनी भयावह होती हैं कि उनका उन्मूलन करने के लिए संघर्ष के बिना काम ही नहीं

चल सकता। रूढ़िवादी, प्रतिक्रियावादी, दुराग्रही, मूढ़मति, अहंकारी, उद्दंड, निहित स्वार्थी और असामाजिक तत्त्व, विचारशीलता और न्याय की बात सुनने को ही तैयार नहीं होते। वे सुधार और सदुद्देश्य को अपनाना तो दूर और उलटे प्रगति के पथ पर पग-पग पर रोड़े अटकाते हैं। ऐसी पशुता और पैशाचिकता से निपटने के लिए प्रतिरोध और संघर्ष अनिवार्य रूप से आवश्यक है। हिंदू-समाज में अंध परंपराओं का बोलबाला है। जाति-पाँति के आधार पर ऊँच-नीच, स्त्रियों पर अमानवीय प्रतिरोध, बेईमानी और गरीबी के लिए विवश करने वाला विवाहोन्माद, मृत्युभोज, धर्म के नाम पर लोकश्रद्धा का शोषण आदि ऐसे अनेक कारण हैं जिनने देश की आर्थिक बरबादी और तज्जनित असंख्य विकृत्तियों को जन्म दिया है। बेईमानी, मिलावट, रिश्वत और भ्रष्टाचार का हर जगह बोलबाला है, सामूहिक प्रतिरोध के अभाव में गुंडातत्त्व दिन-दिन प्रबल होता जा रहा है और अपराधों की प्रवृत्ति दिन दूनी रात चौगुनी पनप रही है। शासक और नेता जो करतूतें कर रहे हैं, उनसे धरती पाँवों तले से निकलती है। यह सब केवल प्रस्तावों और प्रवचनों से मिलने वाला नहीं है। जिनकी दाढ़ में खून लग गया है या जिनका अहंकार आसमान छूने लगा है, वे सहज ही अपनी गतिविधियाँ बदलने वाले नहीं है। उन्हें संघर्षात्मक प्रक्रिया द्वारा इस बात के लिए विवश किया जाएगा कि वे टेढ़ापन छोड़ें और सीधे रास्ते चलें। इसके लिए हमारे दिमाग में गांधीजी के सत्याग्रह, मजदूरों के घिराव, चीनी कम्युनिस्टों की सांस्कृतिक क्रांति के कडुए-मीठे अनुभवों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी समग्र योजना है जिससे अराजकता भी न फैले और अवांछनीय तत्त्वों को बदलने के लिए विवश किया जा सके। उसके लिए जहाँ स्थानीय, व्यक्तिगत और सामूहिक संघर्षों के क्रम चलेंगे, वहाँ स्वयं सेवकों की एक विशाल 'युग

सेना' का गठन भी करना पड़ेगा जो बड़े-से-बड़ा त्याग-बलिदान करके अनौचित्य से करारी टक्कर ले सकें। भावी महाभारत इसी प्रकार का होगा। वह सेनाओं से नहीं, महामानवों, लोकसेवियों और युगनिर्माताओं द्वारा लड़ा जाएगा। सतयुग लाने से पूर्व ऐसा महाभारत अनिवार्य है। अवतारों की शृंखला सृजन के साथ-साथ संघर्ष की योजना भी सदा साथ लाई है। युग निर्माण की लाल मशाल का निष्कलंक अवतार अगले दिनों इसी भूमिका का संपादन करेगा।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 60-61

युग परिवर्तन का मंगलाचरण-ज्ञानयज्ञ

युग परिवर्तन के लिए अपनी चतुर्मुखी योजना हर प्रेमी परिजन को भली प्रकार समझ लेनी चाहिए। (1) प्रचारात्मक (2) संगठनात्मक (3) रचनात्मक (4) संघर्षात्मक–अपनी प्रक्रिया क्रमशः इन चार चरणों में विकसित होगी। शुभारंभ प्रचारात्मक प्रयोग से किया गया है। ज्ञानयज्ञ या विचार-क्रांति के नाम से इसी प्रयोग को पुकारते हैं। जब तक वस्तुस्थिति विदित न हो, समस्याओं, बीमारियों का निदान और कारण मालूम न हो, तब तक उपचार का सही कदम नहीं उठ सकता। अपने प्रचार अभियान में इन दिनों यही सिखाया जा रहा है कि व्यक्ति और समाज की समस्त समस्याओं का एकमात्र कारण मनुष्य की चिंतन-पद्धति का विकृत हो जाना है। इसे सुधारे-बदले बिना किसी समस्या का चिरस्थायी हल न निकलेगा। वस्तुस्थिति है भी यही। भावनात्मक नवनिर्माण ही विश्वव्यापी प्रगति और शांति का एकमात्र हल है। इस तथ्य पर सर्वसाधारण का ध्यान जितनी गहराई तक केंद्रित होगा, उतनी ही तत्परता से बौद्धिक क्रांति के सरंजाम जुटेंगे। बुद्धि को विकृत करने वाले साधन ही सर्वत्र बिखरे पड़े हैं। उनके स्थान पर परिष्कृत प्रचार तंत्र का निर्माण करना पड़ेगा।

इस दृष्टि से वे सभी कार्य अति महत्त्वपूर्ण हैं, जिनका आरंभ युग निर्माण योजना के अंतर्गत इन दिनों छोटे रूप में आरंभ किया गया है। वाणी, लेखनी, प्रकाशन, कला, संगीत, अभिनय, शिक्षा, प्रदर्शन, वाक्य पट, समारोह आदि अगणित प्रचार माध्यमों की विशाल परिमाण में आवश्यकता पड़ेगी, जिसके लिए प्रचुर धनशक्ति और जनशक्ति की आवश्यकता है। मस्तिष्कों को ढालने के लिए प्रचारतंत्र जितना समर्थ होगा उतना ही सफलतापूर्वक मानवीय चिंतन एवं क्रिया-कलाप को परिष्कृत किया जा सकेगा। प्रचार तंत्र द्वारा वर्तमान विनाशात्मक स्वरूप को निरस्त करने के लिए उतने ही बड़े सृजनात्मक प्रचार तंत्र को खड़ा करना पड़ेगा। इसके लिए साहित्य निर्माण, उसकी खपत, प्रवचन, संगीत, फिल्म आदि अनेक माध्यमों को विशाल रूप दिया जाना है। इसके लिए प्रचुर परिमाण में धनशक्ति और जनशक्ति की जरूरत पड़ेगी। इसकी व्यवस्था हम लोग स्वयं बड़ी आसानी से जुटा सकते हैं, यदि लोभ-मोह के जंजाल से निकलकर वासना-तृष्णा को ठोकर मारकर निर्वाहभर के लिए प्राप्त होने पर संतोष करके अपनी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक क्षमता को प्रयुक्त करने लगें।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 59

ब्रह्मभोज का सच्चा स्वरूप—ज्ञानयज्ञ

साधु और ब्राह्मण का कार्य धर्मप्रचार था। आज इन वर्गों की जनसंख्या तो प्राचीनकाल की अपेक्षा अनेक गुनी अधिक है, पर कर्त्तव्य का सर्वथा लोप होता चला जा रहा है। अपनी निज की मुक्ति कमाने तथा चेली-चेले मूँड़ने के खराब धंधे में फँसे हुए साधु और लड्डू-रबड़ी उड़ाने वाले, दान-दक्षिणा से लखपती बने हुए ब्राह्मण चारों ओर देखे जा सकते हैं, पर वह ब्रह्मकर्त्तव्य जिससे जनता का मानसिक स्तर ऊर्ध्वगामी रहता

है, आज दीख नहीं पड़ता। इस अभाव की पूर्ति हम लोगों को मिल-जुलकर करनी होगी। जैसी टूटी-फूटी योग्यता एवं परिस्थिति है, उसी में से कुछ का उत्सर्ग उस लुप्तप्राय ब्रह्म परंपरा को जीवित रखने के लिए करना होगा। यही धर्मफेरी का उद्देश्य है। यज्ञ किए बिना, दान दिए बिना, गौ को रोटी दिए बिना, भिखारी को भीख दिए बिना गृहस्थ का भोजन पाप-भोजन माना गया है। आज कुपात्र भिखारियों को देने की अपेक्षा धर्मप्रचार के लिए, धर्म साहित्य वितरण करके आत्माओं में ज्ञान का प्रकाश देने के लिए नित्य कुछ अंशदान या एक-दो मुट्ठी अन्न निकालने का व्रत हम में से हर एक को लेना चाहिए। सच्ची तीर्थयात्रा के रूप में धर्मफेरी और सच्चे ब्रह्मभोज के रूप में धर्म मुट्ठी का व्रत हमारे जीवन के दैनिक क्रम में अनन्य रूप में घुल जाना चाहिए।

अन्नदान से ज्ञानदान का पुण्य सौ गुना अधिक बताया गया है। अन्न खाने से थोड़ी देर के लिए भूख बुझती है और कुछ ही देर बाद पेट खाली होकर वह भूख पुनः ज्यों की त्यों जाग्रत हो जाती है, पर ज्ञान-दान से यदि किसी आत्मा में थोड़ी-सी भी प्रकाश-ज्योति उत्पन्न हो जाय तो उससे जन्म-जन्मांतरों के दुःख-शोक मिट सकते हैं और वह व्यक्ति पशु से देव बन सकता है। इतना बड़ा उपकार ज्ञान-दान के अतिरिक्त और किसी अन्न, वस्त्र आदि भौतिक पदार्थों की सहायता से संभव नहीं। अन्न, धन आदि का पुण्य फल अगले जन्म में और योनियों में भी मिल सकता है, पर ज्ञान-दान का प्रतिफल तो केवल मनुष्य योनि में ही संभव है इसलिए ज्ञान-दान देने वाले को अगले जन्म में निश्चित रूप से मनुष्य-शरीर ही प्राप्त होता है। जिस प्रकार बीमा कंपनी के एजेंट को एकमुश्त, कमीशन और फिर जब तक बीमा चले तब तक किश्तों पर वार्षिक कमीशन घर बैठे मिलता रहता है,

उसी प्रकार धर्मप्रेरणा देने वाले व्यक्ति को उसकी प्रेरणा से धर्ममार्ग में लगने वाले व्यक्तियों के पुण्य का एक भाग कमीशन रूप में मिलता रहता है। पुरोहित को, यजमान को पुण्यदान का दसवाँ अंश इसीलिए है कि पुरोहित की प्रेरणा से यजमान प्रभावित होता है और प्रेरक का शुभ–अशुभ कार्यों में भागीदार होना वर्तमान सरकारी कानूनों के अनुसार भी और आध्यात्मिक-धार्मिक ईश्वरीय नियमों के अनुसार भी निश्चित है।

-अखण्ड ज्योति फरवरी 1958 पृ. 41

धन का उपयोग लोकमंगल में करें

हमारा पहला परामर्श यह है कि अब किसी को भी धन का लालच नहीं करना चाहिए और बेटे-पोतों को दौलत छोड़ मरने की विडंबना में नहीं उलझना चाहिए। यह दोनों ही प्रयत्न निरर्थक सिद्ध होंगे। अगला जमाना जिस तेजी से बदल रहा है उससे इन दोनों विडंबनाओं से कोई–कुछ लाभान्वित न हो सकेगा वरन लोभ और मोह की इस दुष्प्रवृत्ति के कारण सर्वत्र धिक्कारा भर जाएगा। दौलत छिन जाने का दुःख और पश्चात्ताप सताएगा सो अलग। इसलिए यह परामर्श हर दृष्टि से सही ही सिद्ध होगा कि मानव जीवन जैसी महान उपलब्धि का उतना ही अंश खरच करना चाहिए जितना निर्वाह के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हो। इस मान्यता को हृदयंगम किए बिना आज की युग पुकार के लिए किसी के लिए कुछ ठोस कार्य कर सकना संभव न होगा। एक ओर से दिशा मुड़े बिना दूसरी दिशा में चल सकना संभव ही न होगा। लोभ-मोह में जो जितना डूबा हुआ होगा उसे लोकमंगल के लिए न समय मिलेगा और न सुविधा। सो परमार्थ पथ पर चलने वालों को सबसे प्रथम अपने इन दो शत्रुओं को रावण–कुंभकरण को और कंस-दुर्योधन को निरस्त

करना होगा। यह दो आंतरिक शत्रु ही जीवन-विभूति को नष्ट करने के सबसे बड़े कारण हैं। सो इनसे निपटने का अंतिम महाभारत हमें सबसे पहले आरंभ करना चाहिए। देश के सामान्य नागरिक जैसे स्तर का सादगी और मितव्ययतापूर्ण जीवन स्तर बनाकर स्वल्प व्यय में गुजारे की व्यवस्था बनानी चाहिए और परिवार को स्वावलंबी बनाने की योग्यता उत्पन्न करने तथा हाथ-पाँव से कमाने में समर्थ बनाकर उन्हें अपना वजन आप उठा सकने की सड़क पर चला देना चाहिए। बेटे-पोतों के लिए अपनी कमाई की दौलत छोड़ मरना भारत की असंख्य कुरीतियों और दुष्ट परंपराओं में से एक है। संसार में अन्यत्र ऐसा नहीं होता। लोग अपनी बची हुई कमाई को जहाँ उचित समझते हैं, वसीयत कर जाते हैं। इसमें न लड़कों को शिकायत होती है और न बाप को कंजूस-कृपण की गालियाँ पड़ती हैं। सो हम लोगों में से जो विचारशील हैं, उन्हें तो ऐसा साहस इकट्ठा करना चाहिए। जिनके पास इस प्रकार का ब्रह्मवर्चस न होगा, वे माला सटककर, पूजा-पत्री उलट-पलटकर मिथ्या आत्मप्रवंचना भले ही करते रहें। वस्तुतः परमार्थ पथ पर एक कदम भी न बढ़ सकेंगे। समय, श्रम, मन और धन का अधिकाधिक समर्पण विश्वमानव की सेवा को समर्पण कर सकने की स्थिति तभी बनेगी जब लोभ और मोह के खरदूषण कुछ अवसर मिलने दें। लोभ और मोहग्रस्त को आपापूती से ही फुरसत नहीं, बेचारा लोकमंगल के लिये कहाँ से कुछ निकाल सकेगा और इसके बिना जीवन साधना का स्वरूप ही क्या बन पड़ेगा ? जिनके पास गुजारे भर के लिए पैतृक संपत्ति मौजूद है, उनके लिए यही उचित है कि आगे के लिए उपार्जन बिलकुल बंद कर दें और सारा समय परमार्थ के लिए लगाएँ। प्रयत्न यह भी होना चाहिए कि सुयोग्य स्त्री-पुरुषों में से एक कमाए, घर खरच चलाए और दूसरे को लोकमंगल में प्रवृत होने की छूट रहे।

संयुक्त परिवारों में से एक व्यक्ति विश्वसेवा के लिए निकाला जाए और उसका खरच परिवार वहन करे। जिनके पास संग्रहीत पूँजी नहीं है, रोज कमाते रोज खाते हैं उन्हें भी परिवार का एक अतिरिक्त सदस्य बेटा 'लोकमंगल' को मान लेना चाहिए और उसके लिए जितना श्रम, समय और धन अन्य परिवारियों पर खरच होता है, उतना तो करना ही चाहिए।

-अखण्ड ज्योति जून 1971 पृ. 56

युग देवता के चरणों में जीवन पुष्प समर्पित

कभी हमने पूर्वजन्मों के अच्छे संस्कार वालों और अपने साथी सहचरों को बड़े प्रयत्नपूर्वक ढूँढ़ा था और अखण्ड ज्योति परिवार की शृंखला में गूँथकर एक सुंदर गुलदस्ता तैयार किया था। मंशा थी कि इन्हें देवता के चरणों में चढ़ाएँगे, पर अब जबकि बारीकी से नजर डालते हैं कि कभी के अति सुरम्य पुष्प अब परिस्थितियों ने बुरी तरह विकृत कर दिए हैं। वे अपनी कोमलता, शोभा और सुगंध तीनों ही खोकर बुरी तरह इतना मुरझा गए कि हिलाते-डुलाते हैं तो भी सजीवता नहीं आती, उलटी पंखड़ियाँ झर जाती हैं। ऐसे पुष्पों को फेंकना तो नहीं है क्योंकि मूल संस्कार जब तक विद्यमान हैं, तब तक यह आशा भी है कि कभी समय आने पर इनका भी कुछ सदुपयोग संभव होगा, किसी औषधि में यह मुरझाए फूल भी कभी काम आएँगे, पर आज तो देव-देवी पर चढ़ाए जाने योग्य सुरभित पुष्पों की आवश्यकता है सो उन्ही की छाँट करनी पड़ रही है। अभी आज तो सजीवता ही अभीष्ट है। वस्तुस्थिति की परख तो कहने-सुनने-देखने-मानने से नहीं वरन कसौटी पर कसने से ही होती है। सो परिवार की सजीवता-निर्जीवता ,श्रद्धा-अश्रद्धा, संकीर्णता-विड़ंबना के अंश परखने के लिए यह वर्तमान प्रक्रिया प्रस्तुत की है।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1969 पृ. 9-10

गुरुदेव की कसौटी पर खरे उतरें

विशाल परिवार में कहाँ सच्ची आत्मीयता का कितना अंश विद्यमान है, यह जानने की इच्छा होती है तो इसी कसौटी पर कसकर वस्तुस्थिति जान लेते हैं कि हमारा दरद किस-किस की नसों में और कितनी मात्रा में भर चला और हमारी आग की कितनी चिनगारियाँ कितने अंशों में किसके कलेजे में सुलगने लगीं। अपनी-अपनी मनोदशा ही तो है। लोगों के सोचने का ढंग जो भी हो अपनी तो यही प्रकृति बन गई। जो अपने को हमारे सम्मुख अपने लौकिक व्यवहार से प्रियजन सिद्ध करना चाहते हैं, वे हमें निरर्थक लगते हैं, किंतु जो कभी मिलते भी नहीं, पत्र भी नहीं लिखते, प्रशंसा-पूजा का हलका सा भी प्रयत्न नहीं करते, वे प्राणप्रिय और अति समीप लगते हैं, यदि मिशन के लिए कुछ काम कर रहे हैं।

-अखण्ड ज्योति अगस्त 1969 पृ. 10

विचार परिवर्तन के आधार

सफल जीवन जीने की आकांक्षा यदि साकार करनी हो तो पहला कदम आत्मनिरीक्षण का उठाया जाना चाहिए। अपने विचारों, मान्यताओं, आस्थाओं और अभिमान की समीक्षा करनी चाहिए और उनमें जितने भी अवांछनीय तत्व हों, उन्हें उन्मूलन करने के लिए जुट जाना चाहिए। यह तभी संभव है ? जब उनकी स्थान पूर्ति के लिए सद्विचारों के आरोपण की व्यवस्था बनाली जाए। कहना न होगा कि विचार-परिवर्तन के चार ही आधार है—स्वाध्याय, सत्संग, मनन और चिंतन। इन्हें अपनाया जा सके तो जीवन का स्वरूप बदलेगा और अवसाद उत्कर्ष में परिणत होगा।

-अखण्ड ज्योति जुलाई 1972 पृ. 52

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

सद्‌वाक्य, पोस्टर, स्टीकर योजना

पूज्यवर का सारा जीवन ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित रहा। सद्‌वाक्यों में समाया हुआ है। स्टीकर्स में छपे वाक्य बहुत प्रेरणाप्रद होते हैं, क्योंकि उस प्रेरणा के पीछे पूज्य गुरुदेव की साधना और तपस्या की शक्ति भी सन्निहित रहती है। इन स्टीकर्स ने अनेक व्यक्तियों के चरित्र, चिंतन एवं व्यवहार में परिवर्तन किए हैं, इसके अनेक प्रमाण हैं। दुपहिया, तिपहिया, चार पहिया वाहनों, बसों, ट्रेनों, स्टेशनों, बस स्टेंडों, कार्यालयों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, घरों, विद्यालयों में लिखे अथवा स्टीकर्स के रूप में चिपकाए गए अथवा बड़े पोस्टर्स के रूप में लगाए गए ये प्रेरणाप्रद वाक्य आने-जाने वाले हजारों लोगों को वर्षों तक बार-बार पढ़ने और सोचने के लिए विवश करते हैं और अंततः पाठक की विचारधारा को और फिर आचरण को भी प्रभावित करते हैं। एक ही वाक्य को बार-बार पढ़ने पर व्यक्ति उस पर सोचने पर विवश हो जाता है। 'करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान'। व्यक्ति इन वाक्यों का प्रयोग दूसरों के साथ वार्तालाप के दौरान भी करते रहते हैं। इन वाक्यों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति को नीतिवान, समझदार और विवेकवान समझा जाता है। जिस व्यक्ति के आवास पर जो वाक्य अंकित होता है, ऐसा समझा जाता है कि वह व्यक्ति उस विचार से सहमत है। उत्कृष्ट विचारों वाले स्टीकर्स उस घर

में रहने वालों के व्यक्तित्व की पहचान कराते हैं, उनकी विचारधारा से परिचित कराते हैं। भक्त शिरोमणि हनुमान जबलंका में पहुँचे, तो एक घर पर 'राम' नाम अंकित हुआ देखा। उन्होंने समझ लिया कि इस घर में कोई सज्जन पुरुष रहते हैं। वह विभीषण का घर था। जिन घरों में सद्वाक्य लगे होते हैं, उन घरों की शोभा भी बढ़ जाती है। अपने देश में स्वाध्याय की प्रवृत्ति बहुत कम है, ऐसी स्थिति में कड़वी एवं लाभदायक दवा स्टीकर्स के रूप में काम करती है और बहुत पुस्तकें पढ़ने से ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होती है। युग निर्माण योजना, मथुरा से अनेक सुंदर, आकर्षक, सस्ते एवं रंगीन स्टीकर्स तथा पोस्टर्स तैयार कराए गए हैं। ज्ञानदान सबसे बड़ा पुण्य, परमार्थ, ईश्वरभक्ति, लोकसेवा और साधु-ब्राह्मण का काम है। दानदाता स्वयं अपने हाथ से स्टीकर बाँटकर बहुत आत्मसंतोष प्राप्त करते हैं। स्टीकर योजना ज्ञानदान का सबसे सस्ता, सरल एवं आसान माध्यम है। एक रुपए का स्टीकर वर्षों तक कितने ही लोगों को प्रेरित करता रहता है। स्टीकर्स अभियान को माध्यम बनाकर पूज्यवर की उनके चिंतन को घर-घर, जन-जन तक पहुँचाने की आकांक्षा की पूर्ति में सहयोगी बनने हेतु निम्न प्रकार से प्रयास करने चाहिए।

क्या करें ? कैसे करें ?

(1) तीस प्रकार के सद्वाक्यों के स्टीकर्स तैयार हैं। हर पाठक बंधु से निवेदन है कि अधिक-से-अधिक स्टीकर्स (6''x4'') मँगाकर अपने घर के हर कमरे, बरामदे, भोजनालय आदि स्थानों पर चिपकाएँ। ये स्टीकर्स अपने परिचितों, रिश्तेदारों, मित्रों, स्नेहीजनों के आवास आदि पर भी लगाएँ।

(2) कम से कम 1000 स्टीकर्स (18 प्रकार के) आप अपने नाम, पते, फोन नंबर सहित छपा सकते हैं। अपनी फर्म के नाम से

छपा सकते हैं। फर्म के प्रचार का यह अच्छा माध्यम है। किसी के जन्मदिन-विवाहदिन की वर्षगाँठ, पर्व-त्योहार पर उपहार हेतु अथवा पूर्वजों की पुण्य स्मृति में छपा सकते हैं। 18 स्टीकर्स के सेट का यह उपहार सबको बहुत पसंद आएगा। गायत्री तपोभूमि में नाम-पता छापने के लिए रिक्त स्थान वाले स्टीकर्स तैयार हैं, जो तुरंत भेजे जा सकते हैं। इन्हें मँगाकर स्थानीय शहर में स्क्रीन प्रिंटिंग से नाम-पता आदि छपा सकते हैं। गायत्री तपोभूमि में भी नाम-पता छपाने की व्यवस्था हो सकती है।

(3) गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता भाई-बहन रिक्त स्थान वाले अधिक स्टीकर्स ट्रांसपोर्ट से मँगा लें। स्थानीय व्यापारियों, दुकानदारों, धनवानों आदि सद्विचारों के प्रचार में रुचि रखने वाले परिजनों को समझाकर उनके नाम-पते रिक्त स्थान पर स्थानीय शहर में स्क्रीन प्रिंटिंग से छपाकर दिए जा सकते हैं।

(4) जीवन की दिशा को बदल देने वाले मर्मस्पर्शी सद्वाक्यों का संकलन आकर्षक मोटे आर्ट पेपर पर विभिन्न साइजों में पोस्टर्स उपलब्ध हैं। जिनकी जानकारी अंतिम पृष्ठ पर परिशिष्ट में देखें।

दीवार लेखन योजना

दीवार लेखन आज के युग में प्रचार-प्रसार का एक सस्ता और स्थायी साधन है। गाँव हों या नगर, गली, मुहल्ले, बाजार सभी जगह दीवारों पर सद्वाक्य लिखे जा सकते हैं जो कि हर आने-जाने वाले की नजर में आ ही जाते हैं। इनका प्रभाव भी स्थायी होता है और एक बार भली भाँति लिख दिया जाए तो कई वर्षों तक सैकड़ों-लाखों व्यक्तियों को वह अपना मूक संदेश देता रहता है। ज्ञानयज्ञ को व्यापक बनाने के लिए प्रचार के जो अनेक तरीके अपनाए जा रहे हैं, उनमें से दीवार लेखन को हर कोई आसानी से कर सकता है। चुनाव प्रचार

तथा व्यापारिक लाभ के लिए हर किसी दीवार पर जो चाहे लिखते रहते हैं। 'आदर्श वाक्य लेखन' जैसे लोकमंगल के कार्य का तो कोई भी विरोध नहीं करेगा, वरन जिसकी दीवार पर लिखा जाएगा उसे प्रसन्नता ही होगी कि एक सत्प्रयोजन के लिए प्रयोग करने से दीवार का गौरव बढ़ा।

इस दीवार लेखन के कार्य को एक आंदोलन के रूप में चलाकर हम जहाँ सद्विचारों का प्रचार करने का गौरव पाते हैं, वहीं समूचे परिवेश को भी स्वच्छ, सुशोभित करते हैं। कौन-से वाक्य लिखे जाएँ यह तय करना कठिन कार्य नहीं है। 'दीवार लेखन' पुस्तक मूल्य 2 रुपए से सहायता ली जा सकती है। एक ही वाक्य को बार-बार लिखने की अपेक्षा नए वाक्य लिखना अधिक उपयुक्त है ताकि उनसे विभिन्न प्रकार की प्रेरणाएँ मिल सकें। इससे पढ़ने वालों को नई बातें जानने की उत्सुकता बनी रहेगी। विविध वाक्यों से अनेक प्रकार का मार्गदर्शन भी मिलेगा। आदर्श वाक्यों को देखकर बहुत सारे व्यक्ति सदा कुछ-न-कुछ श्रेष्ठ विचार ग्रहण करते रहेंगे तथा और अधिक जानकारी पाने की जिज्ञासा भी जाग्रत होगी। यदि आदर्श वाक्य के नीचे 'युग निमाण योजना, मथुरा', 'गायत्री तपोभमि, मथुरा', 'शांतिकुंज, हरिद्वार' अथवा स्थानीय शक्तिपीठ या ज्ञान मंदिर का पता भी लिखा हो तो विचारवान व्यक्ति वहाँ से संपर्क करके लोक-कल्याण और आत्मोत्थान के मार्ग में और भी आगे बढ़ सकते हैं। इस प्रकार स्वल्प साधनों और सामान्य प्रयत्न से ही एक महान कार्य संपन्न कर लेने का गौरव आप पा सकेंगे।

भावनाशील परिजन स्वयं ही साधन, सुविधा और परिस्थितियों का आकलन करके कार्य की रूपरेखा निश्चित कर सकते हैं। फिर भी कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं, जिन पर भी विचार किया जाए तो अच्छा रहेगा।

1. सर्व प्रथम अपने घर से ही कार्य प्रारंभ करना उचित रहता है। परिजन अपने घर के मुख्य द्वार के पास उपयुक्त स्थान देखकर दीवार पर एक अच्छा सा सद्वाक्य लिख दें। इससे जहाँ द्वार की सुंदरता बढ़ेगी, वहीं आपकी सुरुचि एवं सुसंस्कारिता की भी लोगों पर छाप पड़ेगी, आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। सभी शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, शाखाएँ एवं प्रज्ञा मंडल इसी प्रकार अपने सभी सदस्यों, परिचितों और संबंधियों से अपने द्वार पर सद्वाक्य लेखन का कार्य सुनिश्चित कराएँ।

2. प्रत्येक गाँव, मोहल्ले में कुछ व्यक्ति ऐसे अवश्य होते हैं जो धनोपार्जन की आवश्यकता और पारिवारिक दायित्वों की चिंता से मुक्त हों। उनके लिए समय काटने का भी साधन नहीं रहता। ऐसे लोग टोली बनाकर इस कार्य को करने का प्रयास करें। प्रातः भ्रमण की टोलियाँ यदि सप्ताह में एक दिन यह कार्य करें तो नीरसता भी दूर होगी और एक रचनात्मक कार्य करने का उल्लास भी होगा।

3. व्यापारी वर्ग इस कार्य हेतु ठोस सहयोग प्रदान करने में पूरी तरह सक्षम है। वे कुछ धन इस धर्म-कार्य में व्यय करके पेंटरों से नगर व गाँव में दीवार लेखन का कार्य करा सकते हैं। ऐसे सद्वाक्यों के नीचे यदि वे चाहें तो अपने प्रतिष्ठान का नाम भी लिखा सकते हैं। उनके बड़े-बड़े विज्ञापनों के बोर्ड जो नगर की सड़कों पर जगह-जगह लगे हैं, उनमें भी सद्वाक्य लिखाए जा सकते हैं।

4. स्कूल, कॉलेज व अन्य सार्वजनिक संस्थाओं से भी सहयोग लिया जा सकता है और उनको दीवार लेखन का महत्व समझाकर प्रेरित किया जा सकता है। धर्मशालाएँ तथा मोहल्ला सुधार समितियाँ भी अपने सूचना पटों पर प्रतिदिन एक सद्वाक्य लिखकर आने-जाने वालों को प्रेरणा दे सकते हैं। कॉलेज की पत्रिका में भी प्रत्येक पृष्ठ पर एक सद्वाक्य छापा जा सके तो छात्रों को प्रेरणा देने में सहायक होगा।

5. छात्र वर्ग तो इस कार्य में बहुत ही सक्रिय योगदान प्रदान कर सकता है। स्काउटिंग, राष्ट्रीय सेवा योजना, एन. सी. सी. आदि के छात्र वर्ष में 10–15 दिन के प्रशिक्षण वर्ग में भाग लेते हैं और वहाँ गली, मोहल्लों की सफाई, वृक्षारोपण, प्रौढ़ शिक्षा आदि के कार्यक्रम आयोजित करते हैं। यदि उसमें दीवार लेखन का भी कार्यक्रम सम्मिलित कर लिया जाए और कुछ छात्र, जिनका लेख अच्छा हो, दीवार लेखन करें तो क्षेत्र में स्थायी प्रभाव पड़ेगा।

6. आपके क्षेत्र से यदि कोई समाचार पत्र निकलता हो तो संपादक/प्रकाशक से संपर्क करके उनसे पत्र में किसी प्रमुख स्थान पर प्रतिदिन एक सद्वाक्य छापने का अनुरोध किया जा सकता है। इसी प्रकार साप्ताहिक/मासिक पत्र, पत्रिकाओं का भी सहयोग लिया जा सकता है।

7. बसों व ट्रकों पर भी सद्वाक्य लिखकर इस उद्देश्य का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ तरह-तरह की बातें उन पर लिखी रहती हैं, वहीं यदि सद्वाक्य लिखने की प्रेरणा जागृत की जा सके तो ये 'बोलती दीवारें' 'चलती-फिरती बोलती दीवारें' बन जाएँ। यदि राज्य परिवहन निगम और रेल मंत्रालय भी इस आंदोलन में सहयोग करने लगें तो सारे देश में विचारक्रांति का शंखनाद गूँजने में जरा भी देर न लगेगी।

श्रवण कुमार योजना

परमपूज्य गुरुदेव एक व्यक्ति नहीं, विचार हैं। उनके क्रांतिकारी चिंतन को जन-जन तक पहुँचाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। गुरुदेव-माताजी अब अपने पुत्रों के कंधों पर अपने स्थूल रूप साहित्य के झोले के माध्यम से जन-जन, घर-घर, गाँव-गाँव, मोहल्ले-मोहल्ले, शहर-शहर, नगर-नगर की तीर्थयात्रा करना चाहते हैं। पाश्चात्य संस्कृति की विकृतियों से सबसे बड़ा खतरा छात्र-युवा पीढ़ी को है।

इसके अतिरिक्त ऋषियों की बनाई स्वस्थ परिवार परंपरा का विखंडन आज की बहुत बड़ी समस्या है। स्वस्थ, शालीन, सेवाभावी, स्वावलंबी, सद्गुणी युवा के निर्माण की आवश्यकता को समझते हुए मार्गदर्शन, प्रेरणा, प्रोत्साहन प्रदान करने वाली पुस्तक 'सफल जीवन की दिशाधारा' (पृष्ठ–272 मूल्य 34 रुपए) प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक की पाठ्य सामग्री के कुछ अंश संकलित कर एक पॉकेट बुक 'सफल जीवन की दिशाधारा' (मूल्य-4 रुपए) प्रकाशित की गई है। परिवारों में स्वस्थ परंपराओं को प्रारंभ करके आदर्श परिवारों के निर्माण हेतु युगऋषि पूज्य गुरुदेव के विचारों को संकलित कर एक पुस्तक 'सुख और प्रगति का आधार-आदर्श परिवार' (मूल्य-7 रुपए) प्रकाशित की गई है। इन पुस्तकों को विद्यालयों में एवं घर-घर जाकर व्यक्ति-व्यक्ति से संपर्क करके छपे मूल्य पर बिक्री करने वाले भाई-बहनों को पारिश्रमिक के रूप में साहित्य उपलब्ध कराने की योजना बनाई गई है। कोई भी भाई-बहन केवल ये पुस्तकें न्यूनतम 3000 रुपये भेजकर मँगाएँगे तो उन्हें 2000 रुपये मूल्य की यही पुस्तकें अतिरिक्त भेजी जाएँगी। यह सहायता युवाओं एवं परिवारों के निर्माण की आवश्यकता समझने वाले दानवीर भामाशाहों के अनुदान से प्रारंभ की गई है। ऐसे उदार परिजनों को इस योजना के लिए अनुदान भेजने का भावभरा अनुरोध भी किया गया है। परिजन इस ज्ञानयज्ञ में आहुतियाँ देकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

क्या करें ? कैसे करें ?

(1) पूज्य गुरुदेव के विचारों की युग निर्माण में आवश्यकता, उपयोगिता, महत्ता समझने वाले प्राणवान परिजन उपरोक्त दोनों पुस्तके मँगाने के लिए न्यूनतम 3000 रुपये भेजकर

आर्डर दें कि कौन-सी पुस्तक कितनी मँगानी हैं। आर्डर में यह भी लिखें कि 2000 रुपये मूल्य की अतिरिक्त पुस्तकें कौन-सी कितनी भेजनी हैं।

(2) 'सफल जीवन की दिशाधारा' पुस्तकों की बिक्री के लिए श्रवण कुमारों को चाहिए कि पीत वस्त्रों में अपने क्षेत्र के हाईस्कूल, इंटर कॉलेज तथा महाविद्यालयों में जाएँ और एक पुस्तक तथा प्रचार-पत्रक प्राचार्य महोदय को देकर यह पुस्तक विद्यार्थियों को खरीदने के लिए निवेदन करें। छात्रों को भी प्रचार-पत्रक बाँट दें। ये प्रचार-पत्रक साहित्य के साथ ही भेज दिए जाएँगे। पुस्तकें लेकर विद्यालय में पहुँच जाएँ और प्राचार्य महोदय के निर्देशानुसार छात्रों को पुस्तकें बिक्री करें।

(3) 'सुख और प्रगति का आधार—आदर्श परिवार' पुस्तक को घर-घर पहुँचाना है, इसके लिए परिजनों को झोले में पुस्तकें लेकर पीत वस्त्रों में दिन में 2 बजे से 5 बजे तक घर-घर जाना चाहिए। बहनों से संपर्क कर उन्हें इस पुस्तक की उपयोगिता समझानी चाहिए और मात्र 7 रुपये में यह पुस्तक खरीदने का अनुरोध करना चाहिए। अपने युवा-किशोर बच्चों के लिए 'सफल जीवन की दिशाधारा' पुस्तक खरीदने का भी अनुरोध करना चाहिए। इस प्रकार कार्य करने पर प्रामाणिक कार्यकर्त्ताओं को निश्चित सफलता मिलती है।

झोला पुस्तकालय योजना

परमपूज्य गुरुदेव की एक ही अपेक्षा अपने बच्चों से थी कि वे श्रवण कुमार बनकर उनके साहित्य को घर-घर पहुँचा दें, उन्हें पढ़ा दें। उनने लिखा है—"युग निर्माण विद्या विस्तार से होगा। युग निर्माण जितना जल्द करना चाहते हैं, विद्या विस्तार की गति उसी अनुपात में बढ़ानी पड़ेगी। आज विद्या विस्तार की गति अत्यंत धीमी है। वर्तमान में युग निर्माण

मिशन का एक मात्र लक्ष्य विद्या विस्तार होना चाहिए, जो ज्ञानयज्ञ के माध्यम से ही संभव है। हमारे साहित्य को घर-घर में पढ़ाएँगे, तो मेरा दावा है कि युग अवश्य ही बदलेगा। इससे कम में काम न बनेगा।"

पूज्यवर ने लिखा है—विश्वशांति के लिए किए गए समस्त उपायों में ज्ञानयज्ञ सर्वोपरि है। इस महान अभियान के लिए क्या हम तनिक भी सहयोग नहीं दे सकते ? इस युग के सबसे प्रबल और महान अभियान में क्या हमारा कुछ भी योगदान नहीं हो सकता ? यह प्रश्न अपने आपसे पूछना चाहिए और यदि अंतरात्मा कहे कि कुछ तो हो ही सकता है, तो सबसे पहले झोला पुस्तकालय चलाना चाहिए।

पूज्यवर ने लिखा है—संसार के समस्त दुःखों का, व्यक्ति के समस्त कष्टों का, समाज के समस्त संकटों का एकमात्र कारण विचारों का विकृत हो जाना ही है। आज यदि दुःखों के स्थान पर सुखों की स्थापना अभीष्ट हो, तो इसका एक ही उपाय है कि लोगों को सही ढंग से सोचने की कला सिखाएँ, जो काम झोला पुस्तकालय द्वारा आसानी से हो सकता है। झोला पुस्तकालय के माध्यम से वही कार्य हो सकता है, जो प्राचीनकाल के साधु-ब्राह्मण अपने बहुमूल्य जीवन को उत्सर्ग करके संपादित करते थे। झोला पुस्तकालय चलाने वाले इस युग के सच्चे लोकसेवक, सच्चे धर्मार्थी, सच्चे ज्ञानी, सच्चे विवेकवान और सच्चे ईश्वर भक्त माने जाएँगे। आज की स्थिति में एक ही उपाय है, जिससे युगांतरकारी प्रबल प्रेरणा को घर-घर, जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। झोला पुस्तकालय चलाना सबसे बड़ा यज्ञ है, सबसे बड़ा तप है, सबसे बड़ा दान है, सबसे बड़ा पुण्य है, सबसे बड़ा परमार्थ है और सबसे बड़ी साधना है। यानि झोला पुस्तकालय चलाने वाले को उपासना, साधना और आराधना तीनों का फल मिलता है। जो हमारा श्राद्ध करना चाहें, वे झोला पुस्तकालय

चलाएँ। इस आश्वासन पर श्रद्धा रखते हुए हमें झोला पुस्तकालय चलाने का संकल्प आज ही ले लेना चाहिए और निम्न विधि के अनुसार उसे चलाना चाहिए।

क्या करें ? कैसे करें ?

(1) प्राणवान परिजन अपने अंशदान का साहित्य लेकर अपने झोले में रखें। अपने परिचित-अपरिचित भाई-बहनों के घर-घर जाकर साहित्य के स्वाध्याय का महत्व समझाकर उन्हें एक पुस्तक दे दें। एक सप्ताह बाद पुनः जाएँ तब पुनः नई पुस्तक देकर पुरानी वापस ले लें। यह मुफ्त अमृत बाँटने का कार्य सच्चे लोकसेवी थोड़ा-सा समयदान देकर अवश्य कर सकते हैं।

(2) परिजन 25 रुपए मूल्य के साहित्य के 12 सेट विभिन्न विषयों के बनालें। पाठकों से 25-25 रुपए लेकर एक-एक सेट दे दें। आप उन्हें आश्वासन दे दें कि एक माह बाद आकर यह सेट ले लेंगे और दूसरा सेट दे देंगे। इस प्रकार 12 महीने तक सेट बदल-बदलकर देते रहेंगे। अंत में प्रत्येक पाठक को एक सेट सदा के लिए दे दिया जाएगा। सेट के पैसे पहले ही मिल चुके हैं।

(3) परिजन यह भी कर सकते हैं कि एक ही मुहल्ले, कॉलोनी, कार्यालय के पाठकों को सदस्य बनाएँ और उनसे अनुरोध करें कि वे स्वयं सेट बदल-बदलकर पढ़ते रहें। इसके लिए सभी बारह पाठकों की एक गोष्ठी में सबका परिचय करा दें और यह योजना समझा दें।

स्वाध्याय मंडलों की योजना

युग चेतना को अग्रगामी बनाने का उत्तरदायित्व महाकाल ने प्रज्ञा परिवार की जाग्रत आत्माओं के कंधों पर डाला है। उन्हें अग्रिम मोर्चे पर खड़ा किया है और लोकमानस के परिष्कार की प्राथमिक आवश्यकता पूरी करने को जुट पड़ने

के लिए प्रेरित एवं बाधित किया है। चुनौती को स्वीकार करते हुए प्रत्येक सृजनशिल्पी को अपना कार्यारंभ इसी प्रकार करना चाहिए कि युग चेतना को हृदयंगम कराने वाले प्रज्ञा साहित्य से जन-जन को अवगत-अनुप्राणित करने का प्रयास करें। इसके लिए घर-घर अलख जगाएँ। स्वाध्याय मंडलों का गठन इसी दृष्टि से किया गया है। यह संगठन बिना किसी प्रकार का कार्य हरज किए, क्षति उठाए या त्याग-बलिदान का साहस सँजोए मात्र इतना प्राथमिक प्रयास करने भर से चल पड़ेगा कि अपने संपर्क क्षेत्र में जो भी विचारशील आते हों, उनमें से न्यूनतम पाँच को प्रज्ञा साहित्य नियमित रूप से पढ़ाने, वापस लेने का व्रत लें और उसे निभाएँ। जो आधा घंटा नित्य युग चेतना को पढ़ें या सुनें वे सभी इस स्वाध्याय मंडल के सदस्य जाने जाएँगे। इस प्रयास को जितने उत्साहपूर्वक जिस क्षेत्र में चलाया जाएगा, उसमें उसी अनुपात से नव जागरण के चिन्ह प्रकट होंगे। कारण यह है कि प्रज्ञा साहित्य जिस युग मनीषा द्वारा सृजा गया है, उसकी ऊर्जा असाधारण है। जो पढ़ेगा, सुनेगा, वह आलोक के क्षेत्र में प्रवेश करेगा और स्वयं को बदलने तथा समय को पलटने में सुनिश्चित रूप से संलग्न दृष्टिगोचर होगा।

स्वाध्याय मंडल प्रक्रिया के विस्तार की बात सोचनी हो तो उसके लिए पूरी-पूरी गुंजाइश विद्यमान है। लाखों प्रज्ञा परिजनों में से सौ के पीछे एक भी प्रज्ञापुत्र स्तर का हो और वह मात्र एक स्वाध्याय मंडल बनाता चले तो ढेरों मंडल बन सकते हैं। प्रत्येक के तीस सदस्य होने पर उस पुण्य प्रयोजन में निरत व्यक्तियों की संख्या करोड़ों में हो जाती है। स्वाध्याय एक व्यक्ति तक सीमित हो तो वह नगण्य हो सकता है, पर यदि उसके साथ एक से पाँच की विस्तार वाली चक्रवृद्धि प्रक्रिया जुड़ जाती है तो समझना चाहिए कि अपनी उपयोगिता और वरीयता के कारण उसको विश्वव्यापी बनाने की पूरी-पूरी संभावना विद्यमान है।

प्रत्येक सक्रिय परिजन अपने निवास स्थान पर सप्ताह में कम-से-कम एक दिन ज्ञानगोष्ठी आयोजित करें। प्रथम 5 मिनट अगरबत्ती जलाना, गायत्री मंत्रोच्चार, अगला 40 मिनट पूज्य गुरुदेव रचित किसी पुस्तक को एक तरफ से पढ़कर सुनाएँ। पढ़ने वाला व्यक्ति पूर्व में पढ़कर एक बार अभ्यास कर ले। इस व्यक्ति को बदलते रह सकते हैं। अगला 15 मिनट आपसी चर्चा हेतु रखें। समापन के समय आतिथ्य सत्कार को खर्चीला बिल्कुल नहीं बनाएँ। मात्र जल या पंचामृत आदि प्रसाद के रूप में दें।

पूज्यवर के क्रांतिकारी विचारों से लोग प्रभावित हुए बिना न रहेंगे और उस पुस्तक को क्रय करना चाहेंगे। ऐसे स्वाध्याय मंडल धीरे-धीरे अन्य क्षेत्रों में भी खोले जायँ। जो प्रज्ञा साहित्य नियमित रूप से पढ़ेगा, वह कुछ नए ढंग से सोचेगा और अंततः "हम बदलेंगे के साथ-साथ युग बदलेगा" की भूमिका निभाते हुए भी दृष्टिगोचर होगा। उसी विचारणा को जीवंत कहा जा सकता है, जो कार्य रूप में विकसित हो।

प्रज्ञा परिवार के वर्तमान लाखों सदस्य इस बात के साक्षी हैं कि उन्हें युग साहित्य के माध्यम से मिलने वाली ऊर्जा ने कितना नरम-गरम किया है और बदलकर कहाँ-से-कहाँ ला दिया है। उतनी साक्षियों पर किसी को विश्वास हो सके तो उसे यह भी अनुभव करना चाहिए कि प्रज्ञा साहित्य के स्वाध्याय का प्रचलन यदि छोटे श्रीगणेश से आरंभ होकर क्रमशः अधिकाधिक व्यापक और विस्तृत होता चला गया तो उसकी क्या परिणति हो सकती है ? स्रष्टा के 'एकोऽहं बहुस्यामि' संकल्प की ही तरह वंश वृद्धि की सर्वत्र दीख पड़ने वाली प्रक्रिया विचार विस्तार पर भी लागू हुए बिना रह नहीं सकती। शर्त एक ही है कि उसके मूल में तथ्य एवं सत्य हो और ज्वलंत करने के लिए प्राणवान ऊर्जा स्रोत व्यक्तित्व।

स्वाध्याय मंडलों की स्थापना के पीछे यह सभी आधार विद्यमान हैं।

आरंभ में इस समुदाय को पिछली पुरानी अखण्ड ज्योति, प्रज्ञा अभियान, युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री आदि पत्रिकाओं से भी स्वाध्याय का शुभारंभ कराया जा सकता है। कुछ-न-कुछ पुस्तकें भी युग साहित्य की पास में हो सकती हैं या अन्यान्यों से माँगी जा सकती हैं। इन्हें अदल-बदलकर पढ़ते रहने का नियमित क्रम चल पड़े तो समझना चाहिए कि स्वाध्याय मंडल का उपक्रम ढर्रे पर चल पड़ा, परंतु यह स्थायी व्यवस्था तो नहीं हुई। इसके लिए खरीदने का खर्च भी उठाना पड़ेगा। इसकी व्यवस्था ठीक इसी प्रकार हो सकती है कि मंडल के सूत्रधार पाँच नैष्ठिक सदस्य अपने-अपने ज्ञानघट रखें और उसमें दैनिक अनुदान जमा करें। पूर्व में जब युग निर्माण योजना का प्रारंभ हुआ था, उस समय परिजनों को सदस्यता शुल्क 'दस पैसा' और 'एक घंटा' समय नित्य देते रहने की शर्त लगी थी। ईमानदार सदस्य तब से लेकर अब तक उस शपथ का निर्वाह सामर्थ्यानुसार करते आ रहे हैं। अब महँगाई कहाँ-से-कहाँ जा पहुँची। ऐसी दशा में ज्ञानघट की राशि बढ़ाकर एक रुपया कर दी गई तो उसे भी वहन किया जाना चाहिए। स्वाध्याय मंडल के नैष्ठिक पाँच सदस्य अपने ज्ञानघटों में एक रुपया नित्य डालें तो महीने में 150) रुपए बन जाएँगे। इतने में तीस सदस्यों को एक पौष्टिक आध्यात्मिक भोजन नियमित रूप से अच्छे जलपान की तरह मिलना आरंभ हो जाएगा। भूख बढ़ेगी तो उसका भी प्रबंध होगा, पर आरंभिक ढर्रा घुमाने के लिए मंडल की आरंभिक व्यवस्था पाँच ज्ञानघटों की राशि से ही हो सकती है और एक सुनिश्चित रचनात्मक कार्य सुव्यवस्थित रूप से चल सकता है।

प्रज्ञा संस्थानों का प्रथम कार्य अपने क्षेत्र के हर शिक्षित को घर बैठे नियमित रूप से प्रज्ञा साहित्य पढ़ाने वापस लेने के लिए झोला पुस्तकालय चलाना है। अन्य चार निर्धारण इसके बाद के हैं। स्वाध्याय मंडलों को भी उसी विधा को अपनाने के लिए झोला पुस्तकालय चलाने को कहा गया है।

प्रज्ञा अभियान का मेरुदंड स्वाध्याय है। यह व्यवस्था न चले तो समझना चाहिए कि बिना मेरुदंड का शरीर अधर में लटका है। स्वाध्याय मंडल छोटे हैं तो क्या, इस प्रथम प्रयास से, अपनी छोटी परिधि के अंतर्गत, इस अनुबंध का प्रतिपालन नियमित रूप से चलाने की परिपूर्ण तत्परता बरतनी चाहिए।

दूसरे, तीसरे, चौथे कार्यक्रमों का रास्ता सभी के लिए खुला है। दूसरा चरण सत्संग है, तीसरा संगठन। छोटे रूप में यह जन्म-दिवसोत्सव की प्रक्रिया अपनाने पर सहज ही चल पड़ेगी। इन छोटे आयोजनों में सत्संग तो प्रमुख है ही, साथ ही एक विचारधारा के लोग, जब एक उद्देश्य से, एक जगह एकत्रित होते हैं, तो सहज ही संगठन बनने लगता है। परिजनों की प्रामाणिकता इस संदर्भ में अति अनिवार्य है जो कई बार न मिलने पर प्रज्ञा संस्थान मात्र ईंट-पत्थर की इमारत अथवा निर्जीव मंदिर होकर रह जाते हैं और वहाँ से कोई मिशन की गतिविधि नहीं चलती। इसके अभाव में महाकाल का उद्देश्य पूरा नहीं होता। इसलिए उन्होंने हाड़-माँस की शक्तिपीठ बनाने की बात कही। इसी भावना के अनुरूप स्वाध्याय मंडलों की स्थापना बहुत व्यावहारिक और अनेक झमेलों से दूर रखने वाली ऐसी योजना है जिसमें परिजनों के अहंकार एवं लोकैषणा के पिशाच को पछाड़ने में सफलता मिलती है। इस प्रकार 24000 स्वाध्याय मंडलों की स्थापना का लक्ष्य है। इसे पूरा करने के लिए सभी प्राणवान प्रज्ञापुत्रों से विशेष आग्रह भरा अनुरोध किया है कि वे इस उत्तरदायित्व को निभाने के लिए आगे आएँ और अपने क्षेत्र में ऐसी

स्थापनाएँ करने के लिए परिव्राजकों की तरह परिभ्रमण करें, अलख जगाएँ और हजारी किसान का उदाहरण प्रस्तुत करें।

पत्रिका विस्तार योजना

अखण्ड ज्योति ज्ञान प्रधान पत्रिका है। युग निर्माण योजना कर्म प्रधान पत्रिका है और प्रज्ञा अभियान पाक्षिक समाचार प्रधान पत्र है। अखण्ड ज्योति कृष्ण है, युग निर्माण योजना अर्जुन है तो प्रज्ञा अभियान संजय है। तीनों पत्रिकाएँ एक दूसरे की पूरक हैं। इन तीनों का त्रिवेणी संगम ज्ञान, कर्म और प्रचार के माध्यम से युग निर्माण आंदोलन को पूर्णता की ओर ले जाने में समर्थ होता है। सभी परिजनों को यह तीनों पत्रिकाएँ पढ़नी चाहिए। यदि प्रत्येक भाई तीनों पत्रिकाएँ न मँगा सके तो एक-एक पत्रिका मँगा लें और आपस में बदल-बदलकर पढ़ लें।

पत्रिका विस्तार के लिए क्या करें ?

(1) पत्रिका के प्रत्येक पाठक बंधु एवं मिशन के सभी परिजनों से अनुरोध है कि प्रत्येक साधक को पत्रिका की उपयोगिता समझाकर अधिकाधिक सदस्य बनाने का प्रयास करें।

(2) प्रत्येक कर्मठ परिजन अपने इष्ट-मित्रों, रिश्तेदारों एवं अन्य समाजसेवी धर्मप्रेमियों सहित न्यूनतम 10-10 सदस्य नए बनाने का प्रयास करें।

(3) दीपावली, नववर्ष पर उपहारस्वरूप भारत में कहीं भी रहने वाले रिश्तेदारों, मित्रों को वार्षिक या आजीवन चंदा भेजकर पत्रिका पहुँचाने का प्रयास करें। इसके लिए दूसरों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

(4) अपनी ओर से इकट्ठी पत्रिकाएँ मँगाकर ज्ञानरथों, झोला पुस्तकालयों, पुस्तक विक्रेताओं, न्यूज पेपर विक्रेताओं के माध्यम से प्रतियाँ विक्रय कराके जन-जन के पास पहुँचा सकते हैं।

(5) उदारदानी भामाशाहों को प्रेरित करें कि वे मंदिरों, विद्यालयों, सार्वजनिक पुस्तकालयों, वाचनालयों, सामाजिक संस्थानों एवं सार्वजनिक संगठनों के संचालकों के पास पत्रिका उपहारस्वरूप भिजवाने का प्रयास करें।

(6) टोली बनाकर वार्षिक एवं आजीवन सदस्य बनाने का अभियान चलाकर अधिकाधिक सदस्य बनाने से पीछे नहीं रहना चाहिए।

(7) प्रत्येक पाठक बंधु से अनुरोध करें कि वह अपनी पत्रिका स्वयं पढ़ें और न्यूनतम 10 अन्य भाई-बहनों को पढ़ाने का प्रयास करें।

(8) विद्या विस्तार हेतु आयोजित यज्ञों की समिति के सदस्यों को, दानदाताओं से एक वर्ष का शुल्क लेकर उन्हें पत्रिका का सदस्य बनाएँ ताकि वे मिशन से स्थाई रूप से जुड़ें और आगे भी सहयोग करते रहें।

(9) व्यापारी बंधु अपने व्यापार में सहयोगी अन्य बंधुओं को इस पत्रिका का सदस्य बनाने का प्रयास करें।

पुस्तक मेलों का आयोजन

पूज्य गुरुदेव यह जानते थे कि उनके क्रांतिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए हम सबको घर से बाहर निकलना होगा। इसी वजह से उन्होंने प्रारंभिक अवस्था में झोला पुस्तकालय चलाने की बात कही। घरेलू एक कुंडीय यज्ञ में भी साहित्य-प्रदर्शन की बात कही। उन्होंने यह भी कहा–"हम शरीर नहीं हैं, विचार हैं।" "हमारे साहित्य का वजन हमारे शरीर के वजन से अधिक है।" "हमारे विचार अगले दिनों धमाका करेंगे।" "हमें घर-घर पहुँचा दीजिए।" "अब कुआँ प्यासे के पास जाएगा।" आदि-आदि।

उनके निर्देशानुसार यज्ञों में साहित्य स्टॉल लगाया जाता रहा। अब यज्ञों का कलेवर विशाल होता गया, उसी अनुपात

में ज्ञानयज्ञ को सफल बनाने में हम सब कार्यकर्त्ता सारी शक्ति झोंकने में लग जाएँ। युवावर्ग को सही दिशा देने के लिए मिशन के साहित्य से उनका परिचय अवश्य कराएँ, इसके लिए समय-समय पर साहित्य की प्रदर्शनी लगनी आवश्यक है। जो शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ तथा उत्साही परिजन जो इस प्रकार के आयोजन हाथ में लेना चाहें, उन्हें प्रदर्शनी लगाने से पूर्व निम्न बिंदुओं का ध्यान रखना चाहिए–

(1) स्थान का चयन–स्थान व्यस्त मार्ग से लगा हो, आस-पास शिक्षण संस्थान तथा छात्रावास हों।

(2) भवन–प्रदर्शनी किसी पक्के हाल में हो। प्रायः राष्ट्रीय स्तर की स्वयंसेवी संस्थाएँ प्रदर्शनियों को तंबुओं में लगाती हैं। मौसम का कुछ भरोसा नहीं रहता, यदि कभी थोड़ी-सी बरसात हो गई तो अत्यधिक क्षति हो सकती है। आस-पास पार्किंग का स्थान हो।

(3) प्रचार-प्रसार–प्रचार-प्रसार के सभी तरीके उपयोग में लाए जाएँ। होर्डिंग्स, बैनर्स, पोस्टर्स एवं अखबारों में पैंफलेट डाले जाएँ, पार्किंग स्थानों पर स्थित वाहनों में पैंफलेट डाले जाएँ, साइकिल-रिक्शों से (प्रीरिकॉर्डेड कैसेट्स से) प्रचार, साथ-साथ पैंफलेट्स बाँटना, टी. वी. के चैनलों पर पट्टियाँ तथा सी. डी. द्वारा प्रचार, निमंत्रण-पत्र द्वारा शिक्षण संस्थानों के प्रधानाचार्यों-प्रवक्ताओं को आमंत्रण, हर शिक्षण संस्था में पोस्टर्स चिपकाएँ, प्रमुख व्यक्तियों से व्यक्तिगत संपर्क निमंत्रण-पत्र द्वारा किया जाए। ऐसी नीति अपनाई जाए जिससे प्रचार सामग्री को देखकर कोई यह न समझे कि यह अभियान किसी धर्म विशेष के प्रचार के लिए है।

(4) सहयोग–स्थानीय कार्यकर्त्ताओं तथा भावनाशील व्यक्तियों की पूर्व में बैठक बुलाएँ। चुने हुए कार्यकर्त्ताओं के साथ तीन बैठकें अवश्य करें। सभी कार्यकर्त्ताओं के साथ एक आमसभा स्तर की बैठक हो, जिसमें अधिक-से-अधिक कार्यकर्त्ता आएँ। समयदान के फार्म भरवाएँ और आयोजन में निष्ठापूर्वक जिम्मेदारियाँ भी निभाने का संकल्प दिलाएँ। कार्यकर्त्ताओं को पोस्टर, पैंफलेट और कुछ निमंत्रण-पत्र भी दें। इस बात का विशेष आग्रह करें कि वे जिन्हें भी आमंत्रित करें, उनके आने का समय पूछें और उस समय स्वयं भी उपस्थित रहें।

कुछ लोगों से आर्थिक सहयोग भी लेने का प्रयास करें। प्रचार-कार्य में सर्वाधिक राशि व्यय होती है। प्रतिष्ठित लोगों के सौजन्य से प्रदर्शनी लगाने से संबंधित कई कार्य किए जा सकते हैं।

परिजनों द्वारा अपनी ओर से अखबार में विज्ञापन दिया जा सकता है, भोजन तथा नाश्ते की व्यवस्था भी परिजनों की ओर से बनाई जा सकती है।

(5) प्रदर्शनी कब लगे ?–हॉल किराए पर लेते समय यह अवश्य ध्यान रखें कि जिन दिनों शादियाँ नहीं होती हैं, उन्हीं दिनों में यह प्रदर्शनी लगे तो हॉल का किराया कम लगेगा। विद्यालयों-कार्यालयों की उन दिनों कुछ छुट्टियाँ भी हों, पूरी छुट्टियाँ न हों। इससे अन्य लोग तथा विद्यार्थी आ सकेंगे। समय प्रातः 11 से सायं 8 का तो हो ही।

(6) कितने दिन की प्रदर्शनी लगे ?–चूँकि यह कार्यक्रम मात्र अपने मिशन का साहित्य प्रस्तुत करेगा और इस पर प्रचार-प्रसार का सारा खरच अपने को ही वहन करना है, जो काफी अधिक होता है। यह भी संभव है कि शुरू में कम लोग आएँ और भीड़ धीरे-धीरे बढ़े। अतः प्रदर्शनी का समय

कम-से-कम 10 दिन तो रखना ही चाहिए। आखिरी दिनों में भीड़ को देखते हुए समय और आगे भी बढ़ाया जा सकता है। कम दिन के आयोजन से आर्थिक कठिनाइयाँ बढ़ सकती हैं। अधिक दिन के आयोजन से आर्थिक चिंताओं से मुक्त होने की संभावना बढ़ जाती है। राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रदर्शनियाँ लगती हैं, वे प्रायः दस दिनों की ही लगती हैं।

कोई आगंतुक खाली हाथ न लौटे–प्रदर्शनी प्रबंधन को यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी आगंतुक खाली हाथ न लौटे। जो साहित्य क्रय करें, उन्हें पेमेंट काउंटर पर ही पुरानी एक अखण्ड ज्योति या एक युग निर्माण योजना पत्रिका दी जा सकती है। किशोरों, युवावर्ग तथा महिलाओं के लिए उपयोगी साहित्य तथा सूचीपत्र आदि निःशुल्क वितरण की व्यवस्था रखी जा सकती है। हॉल से निकलते समय, जिसके हाथ में साहित्य का पैकेट नहीं हो, उसे मिशन की एक छोटी पुस्तक अथवा स्टीकर निःशुल्क दिया जा सकता है। कम कीमत वाली छोटी पुस्तकें तथा मिशन के परिचय का फोल्डर भी वितरित किया जा सकता है। इसके लिए उदारमना व्यक्तियों से संपर्क कर सकते हैं।

पुस्तकों के प्रदर्षन की विधि–पुस्तकों को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करने हेतु निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखें–

(1) पुस्तकों को दीवालों पर ऊपर से नीचे न लटकाएँ। मेजों पर भी एक-दूसरे के ऊपर ओवरलैपिंग न करें। रेलवे स्टॉलों पर एक-दूसरे के ऊपर इस प्रकार रखते हैं कि मात्र शीर्षक पढ़ने में आते हैं। इस प्रदर्शनी में मेजों पर पुस्तकें अलग-अलग रखी जाएँ, एक-दूसरे पर चढ़ाकर न रखें। इससे दर्शक जो भी पुस्तक चाहे, वह हाथ में लेकर पढ़ सकेगा।

(2) सूचीपत्र में जिस क्रम से छपा है, उसी क्रम से पुस्तकें रखें। मात्र पुस्तकें-ही-पुस्तकें न रखें। दो प्रकार की

पुस्तकों के मध्य में कोई-न-कोई मिशन का सामान रख दें। प्रारंभ आर्षग्रंथों से किया जाए, उसके बाद अँगरेजी साहित्य, फिर पंचांग, गायत्री सेट, सद्वाक्य आदि-आदि।

(3) पुस्तकों की थोड़ी-थोड़ी संख्या ही मेज पर प्रदर्शित करें, शेष मेज के नीचे रखें। आवश्यकतानुसार नीचे से निकालकर ऊपर रखें।

(4) मेजें इस प्रकार लगाएँ कि अंदर प्रवेश करने के बाद आगंतुक पूरी प्रदर्शनी देखे, बीच में से निकलने का मार्ग न हो और पेमेंट काउंटर के बाद ही निर्गम द्वार से बाहर निकले। छोटे सामान जैसे–कैसेट, स्टिकर्स, पॉकेट बुक्स आदि के स्टॉल पेमेंट काउंटर के पास ही लगाएँ। दीवालों पर मिशन के सद्वाक्य चिपकाएँ।

(5) प्रदर्शनी लगाने हेतु लगभग चार हजार वर्ग फीट स्थान की आवश्यकता होती है जिसमें देवमंच भी सम्मिलित है। लगभग 175 (2.5 X 4 फीट चौड़ी) मेजें लगती हैं। लगभग 660 रनिंग फीट पर पुस्तकें तथा अन्य सामान प्रदर्शित किए जा सकते हैं।

(6) प्रकाश की समुचित व्यवस्था हो। नियमित बिजली सप्लाई के लिए जेनरेटरों की व्यवस्था अवश्य रखी जाए।

उद्घाटन-समापन–किसी सम्माननीय व्यक्ति से प्रथम दिवस उद्घाटन तथा अंतिम दिन समापन अवश्य कराएँ। समय-समय पर प्रबुद्ध वर्ग, मनीषी, अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर, साहित्यकार आदि को आमंत्रित करें, जिससे वे मिशन से परिचित हो सकें। बीच के दिनों में जो भी मुख्य अतिथि आएँ वे अपने विचार विजिटिंग रजिस्टर में व्यक्त करें।

सुझाव-परामर्शः जिन-जिन स्थानों की शक्तिपीठें तथा प्रज्ञापीठें अपने यहाँ इस प्रकार के आयोजन करना चाहती हैं

वे कृपया इस संबंध में गायत्री तपोभूमि, मथुरा अथवा शांतिकुंज, हरिद्वार से यथाशीघ्र परामर्श कर लें। जो भी परिजन इस संबंध में अपने अमूल्य सुझाव देना चाहें, वे यथाशीघ्र पत्र द्वारा गायत्री तपोभूमि, मथुरा एवं शांतिकुंज, हरिद्वार को सूचित करें।

ज्ञानयज्ञ प्रचारक

ज्ञानयज्ञ के हर होता को अपने विद्या विस्तार केंद्र का पंजीयन अमानत राशि 100 रुपये युग निर्माण योजना, मथुरा के नाम भेजकर करा लेना चाहिए। हर लोकसेवी को ज्ञान का आलोक जन-जन तक पहुँचाने के लिए ज्ञानयज्ञ प्रचारक का दायित्व उठाना चाहिए।

100 पुस्तकें प्रति माह मँगाकर बिक्री द्वारा अथवा अनुदान से समाज में फैलानी चाहिए। पुस्तकें औसतन 5) मूल्य वाली होती हैं। 100 पुस्तकों हेतु 500 रुपये प्रति माह ज्ञानयज्ञ में लगाने में समर्थ परिजन पुस्तकें निःशुल्क वितरित कर सकते हैं अथवा प्रतिमाह 100 पुस्तकें बिक्री करना भी कोई कठिन कार्य नहीं है। परिजनों को ज्ञानयज्ञ प्रचारक बनकर यह कार्य अवश्य करना चाहिए।

ब्रह्मभोज योजना

नए क्षेत्रों में आधी कीमत पर पुस्तकें उपलब्ध कराने के लिए विचार-क्रांति का महत्त्व और आवश्यकता समझने वाले दानवीर भामाशाहों को अपने धन का सदुपयोग ज्ञानयज्ञ में करके पुण्य लाभ प्राप्त करना चाहिए। ज्ञानदान महादान है। ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति का जीवन बदल जाता है, जो किसी के द्वारा किया गया बहुत बड़ा परमार्थ है। परमार्थ के इस महायज्ञ में अपनी आहुतियाँ समर्पित करना किसी के लिए भी सौभाग्य की बात हो सकती है। समर्थ धनवानों को चाहिए कि वे किसी भी पुस्तक के चौथाई मूल्य की दर से अनुदान

भेजकर न्यूनतम 5000 पुस्तकें अपने नाम-पते से छपा लें। इन पुस्तकों पर आधा मूल्य ब्रह्मभोज प्रकाशित कर दिया जाएगा। आधा मूल्य पर ये पुस्तकें निर्धन वर्ग में पहुँचाई जा सकती हैं। आधे मूल्य पर इन पुस्तकों को कोई भी मँगा सकता है। दानदाता स्वयं भी पुस्तकों का चौथाई मूल्य अनुदान में तथा आधा मूल्य पुस्तकों का भेजकर स्वयं भी मँगा सकते हैं।

ज्ञान मंदिरों की स्थापना

पूज्य गुरुदेव के विशाल साहित्य सागर से एक ही विषय की चुनी हुई पुस्तकों के 100 या 50 रुपये मूल्य के सेट तैयार कर लेने चाहिए। आपकी आकांक्षा के अनुरूप सेट गायत्री तपोभूमि से तैयार प्राप्त किए जा सकते हैं। रुचि के अनुसार ये सेट घर-घर में देव मंदिर के साथ ज्ञान मंदिर के रूप में स्थापित कराने चाहिए। पूज्य गुरुदेव हर घर में, ज्ञान मंदिर में स्थापित साहित्य के रूप में उस परिवार में प्रकाश स्तंभ के रूप में निवास करना चाहते हैं और आने वाली पीढ़ियों को मार्गदर्शन देने की आकांक्षा रखते हैं।

सद्विचार योजना

निरक्षरता देश पर सबसे बड़ा कलंक है। दुर्भाग्य की बात यह है कि साक्षरों में भी सत्साहित्य के स्वाध्याय के प्रति कोई रुचि नहीं है। इस देश में ऋषि-मनीषियों द्वार रचे गए साहित्य का नियमित पाठ करने की परंपरा प्राचीनकाल से है। उपासना में पाठ-पूजा को अनिवार्य अंग माना जाता रहा है। प्राचीन आर्षग्रंथों ने जो ज्ञान दिया, वह बहुत महत्वपूर्ण है। वह ज्ञान तत्कालीन समस्याओं के समाधान में रामबाण था। आज परिस्थितियाँ भिन्न हैं। समस्याएँ भी पहले से भिन्न हैं। वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य रचित युग साहित्य का नित्यप्रति स्वाध्याय करना हर मनुष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है। परंपरा इस तरह की चली

कि आर्ष ग्रंथों का पाठ करने के ही बहुत पुण्प फल बताए गए। फलस्वरूप लोग मात्र पाठ तक सीमित रह गए। उससे कुछ भी प्रेरणा, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन प्राप्त करना आवश्यक नहीं समझा गया। जिस मार्ग पर सारा समाज चल रहा है, उसी पर चलना आसान होता है, लेकिन अध्यात्म का मार्ग प्रचलन का उलटा है। यह दुनियाँदारी का शीर्षासन है। इसे समझना प्राणवान, विवेकशील लोगों के लिए ही संभव होता है। इस ज्ञान को, समाज को पढ़ाना बहुत आवश्यक है। पढ़े–लिखों में युग साहित्य के स्वाध्याय में रुचि जाग्रत करना आवश्यक है। जिस कार्य में रुचि होती है, उसके लिए समय भी निकल आता है। इसी उद्देश्य से युग साहित्य की कुछ प्रमुख पुस्तकों की पाठ्य-सामग्री एक पन्ने या फोल्डर की विज्ञप्ति के रूप में प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है। इस विज्ञप्ति में यह भी लिखा होगा कि यह पाठ्य-सामग्री किस पुस्तक से ली गई है। पूरी पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा इससे मिलेगी। पाठक पूरी पुस्तक न भी पढ़ेगा तो भी इस विज्ञप्ति को पढ़कर भी बहुत कुछ सीखेगा। ये विज्ञप्तियाँ अपने नाम, फर्म के नाम, प्रज्ञामंडल, महिला मंडल के नाम से, सौजन्य से छपाने की भी व्यवस्था की गई है। इस हेतु न्यूनतम 8000 विज्ञप्तियों के लिए 1000 रुपए +100 रुपए अन्य खर्च भेजने होते हैं। ये विज्ञप्तियाँ स्वयं भी मँगाई जा सकती हैं। गायत्री तपोभूमि से भी इनके वितरण की व्यवस्था बनाई जा सकती है। परिजनों को ये प्रचार पत्रक मँगाकर समाज में वितरित करना चाहिए। इससे पाठकों में युग साहित्य के स्वाध्याय के प्रति रुचि जगेगी और साहित्य की माँग भी बढ़ेगी।

उपसंहार

समय की पुकार है कि इन प्रयासों में और अधिक तीव्रता लाई जाए। युग की माँग है कि जिन्हें मनुष्यता से प्यार हो, वे नव निर्माण के प्रयत्नों का ईश्वर की पूजा से अधिक महत्त्व मानें। धर्म, दर्शन और अध्यात्म की चुनौती है कि जिनमें इस उत्कृष्टता की प्रकाश किरणें सचमुच विद्यमान हों, वे युग परिवर्तन के लिए, धरती पर देवत्व का अवतरण संभव करने के लिए, अन्यमनस्क होकर चिन्हपूजा करते हुए नहीं, भगीरथ प्रयत्नों में जुटें हुए दिखाई पड़ें। साहस, कर्त्तव्य और पुरुषार्थ की कसौटी आज इस रूप में सामने आई है कि हम ज्ञानयज्ञ के लिए बढ़-चढ़कर ऐसे त्याग-बलिदान का परिचय दें, जिससे मानवीय आदर्शों का पुनरुत्थान हो सके।

परिशिष्ट

पोस्टर साइज	कागज पर	लटकाने योग्य रोल सहित	पत्ती सहित
23"X 36"	20.00	41.00	25.00
20"X 30"	15.00	38.00	18.00
15"X 20"	8.00	21.00	10.00
10"X 15"	4.00	15.00	5.00

नाम वस्तु	1000 मँगाने हेतु डाकखर्च सहित धनराशि	मूल्य प्रति नग
(1) स्टीकर्स 6"X 4"	780 रुपए	70 पैसा
(2) स्टीकर्स 6"X 5" (नाम पते के लिए रिक्त स्थान)	930 रुपए	85 पैसा
(3) स्टीकर्स 6"X 5" (नाम पता छपा हुआ)	1080 रुपए	1) रु0

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा